हम सभी अमन-चैन चाहते हैं, शान्ति की खोज में रहते हैं; पर कभी-कभी हमें वह नहीं मिलता जो हम चाहते हैं। 'अमन जिधर रखा, उधर जाते नहीं, अमन कैसे मिले?' ऐसे ही कुछ प्रश्नों का उत्तर 'भक्ति पुष्प' में मिलेगा। जब हमारा मन अशान्त होता है और हमें किसी और सहारे की आशा नहीं रह जाती है तब हम अपने परमप्रभु ईश्वर को पुकारते हैं और मन में जो भाव आते हैं वे यद्यपि व्यक्त कर पाना बहुत कठिन है किन्तु समय-समय पा जो इस प्रकार के भाव लेखक के मन में उठे, उन्हीं को सरल भाषा-शैली में कुछ बुन्देलखंडी शब्दों का समावेश करते हुए दोहे-भजन कीर्तन के रूप में संकलित किया गया है। इनको पढ़ने, सुनने एवं मनन करने से भक्ति-भावना प्रस्फुटित होगी, ऐसा विश्वास है।

चाह यही इक मेरी भगवन,
और चाह मिट जावे।
केवल तेरी चाह रहे,
बस एक चाह रह जावे।

भक्ति पुष्प

डॉ. भगवान दास पटैरया

नोएडा
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, संवत् 2075
18 मार्च सन् 2018 ई.

भक्ति पुष्प

डॉ. भगवान दास पटैरया
ईमेलः bpateria@gmail.com
फोनः +91-9899004263

डी-11, सेक्टर-36
नोएडा-201303

समर्पण

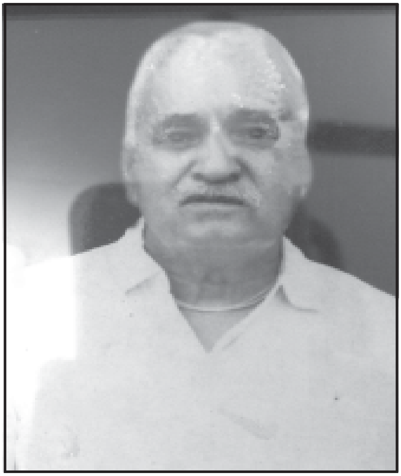

परम पूज्य अनन्य शिवभक्त

स्व. डॉ. महेश लाल ड्डिडी

जिनकी प्रेरणा से यह रचना संभव हुई

की पुण्य स्मृति में

भूमिका

मनुष्य के जीवन में हर मोड़ पर उतार–चढ़ाव तो आते ही हैं और जब उसके सभी सहारे टूट जाते हैं तब स्वभावतः अन्दर से एक करुण पुकार उठती है–'टूटे सभी सहारे आया शरणा तेरी' और परम प्रभु, जिसे कोई परम शक्ति कहते हैं, तो कोई ईश्वर, अल्ला, खुदा, वाहेगुरु, गॉड, शिव, राम, कृष्ण, हरि आदि नामों से पुकारते हैं, उसी पल सहारा देकर हमें उबार लेते हैं। ऐसे ही कुछ पल मेरे जीवन में आए और तब मैंने परम प्रभु को पुकारा। इसी क्रम में लेखनी चल पड़ी और समय–समय पर जो लिखा गया उसे इस 'भक्ति–पुष्प' में संकलित किया गया है।

इसे तीन भागों में विभाजित किया है। पहले भाग में दोहे हैं जो कि सामान्यतया भजन–कीर्तन प्रारम्भ करने की भूमिका में गाए जाते हैं। दूसरे भाग में भजन–संग्रह है जिन्हें सुर–ताल पर सामूहिक रूप से दोहराकर गाया जाता है। तीसरे भाग में कीर्तनों का संग्रह है। प्रत्येक कीर्तन सामूहिक रूप से बारे–बार पुनरावृत्ति करते हुई गायी जाती है।

भले ही व्याकरण की दृष्टि से ये दोहे–भजन–कीर्तन परिशुद्ध न हो अथवा काव्य की परिभाषा के अनुकूल न हों अथवा उतने लयपूर्ण न हों जैसे कविताएँ होती हैं; किन्तु इनमें अन्तरात्मा की झलक है। इससे मुझे भरोसा है कि ये भक्तों के मन को अवश्य लुभाएँगे। इन्हें पढ़कर, गाकर, सुनकर अवश्य ही प्रभु–प्रेम की भावना स्फुटित हो सकेगी, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

इन दोहों–भजनों–कीर्तनों का एक श्रव्य कैसेट भी तैयार है जो कि इच्छुक महानुभाव निम्नांकित पते से उचित मूल्य पर प्राप्त कर सकते है।

4 मार्च सन् 1991

(भगवान दास पटैरया)
डी–11, सेक्टर–36
नोएडा–201303

द्वितीय संस्करण

इस पुस्तक को राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय भारत सरकार के दिनांक 24 दिसंबर 1992 के कार्यालय ज्ञापन संख्या 1L014/6/92-रा. भा. (पत्रिका); परिपत्र संख्या 14/92 द्वारा इसे अन्य पुस्तकों सहित हिन्दी पुस्तकें पढ़ने की रूचि जाग्रत करने के उद्देश्य से ललित साहित्य के रूप में दूसरी सूची के तहत भारत सरकार के मंत्रालय/विभागों/कार्यालयों के पुस्तकालय के लिए क्रय करने हेतु संस्तुति की गई है। इस परिप्रेक्ष्य में कई कार्यालयों से इसकी मांग प्राप्त हुई। अतः द्वितीय संस्करण प्रकाशित करने का विचार किया गया। इस संस्करण में कुछ संशोधन किए गए हैं तथा भाग 3 पृष्ठ 48 की कीर्तनों की संख्या में भी वृद्धि की गई है। इस तृतीय भाग में सभी कीर्तन दो पंक्तियों के हैं और सभी का अलग-अलग स्वतंत्र भाव हैं। अतः इनकी क्रम संख्या अंकित कर दी गई है। इन्हें बार-बार पुनरावृत्ति करते हुए गाया जाता है जैसा भाग 3 के प्रारंभ में पृष्ठ 48 पर दर्शाया गया है।

मेरे परम पूज्य सद्‌गुरुदेव स्वर्गीय महेश लाल डिड्डी कहा करते थे कि इन दो पंक्तियों की कीर्तन मंत्रवत् हैं और इनकी पुनरावृत्ति करते हुए जब भक्त भाव विहोर होकर नृत्य करने लगता हैं तब वह सुख-दुख से ऊपर उठकर परमानन्द की स्थिति में होता है। पृष्ठ 53 पर कीर्तन संख्या 7 ''चिन्ता नही नैया करेंगे किनारे। पार्वती पति भोलेनाथ हमारे।'' का पूर्ण श्रद्धा-विश्वास पूर्वक भाव सहित गायन करते समय भला चिंता कैसे रह सकती है। चिन्ता ही सभी व्याधियों की जड़ है। इसी प्रकार अन्य सभी कीर्तनों में कल्याणकारी भाव संनिहित हैं।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
विक्रमी संवत् 2075
18 मार्च 2018 ई.

डॉ. भगवान दास पटैरया
फोन : 9899004263
नोएडा

भक्ति पुष्प

विषय क्रम

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
	भाग 1 : दोहे	
1.	अर्चना	9
2.	अविरल भक्ति	10
3.	और न कोई आसरा	10
4.	अँखियाँ तरसे	11
5.	दान सत्संग	11
6.	दुख से छुटकारा	12
7.	दृढ़ अनुराग	12
8.	नैया प्रभु के हाथ	13
9.	प्रभु से रुदन	13
10.	प्रभु नाम में मगन	14
11.	प्रभु झाँकी	15
12.	प्रभु वियोग	15
13.	प्रभु प्रेम	16
14.	प्रभु से विनती	16
15.	प्रभु दर्शन	17
16.	प्रभु से माँग	17
17.	प्रभु से नाता	18
18.	भव्य झाँकी	18

19. भक्ति लालसा 19
20. भक्त की चाह 20
21. भक्ति की आस 20
22. भजहु राम सुखदाई 21
23. मन की चाह 21
24. लेकर नाम आधार 22
25. बसहु हृदय दरम्यान 22
26. वांछित फल 23
27. विमल भक्ति 24
28. सत्संग की चाह 24
29. दर्श की आस 25

भाग 2 : भजन

1. अमन कैसे मिले 27
2. आओ भोले शंकर 28
3. कब तक लोगे खबर हमारी 29
4. जीवन सौंप दिया 29
5. डूबती नैया 30
6. तुम्हें कहाँ हम पावें 30
7. तेरी शरण आया 31
8. दरस दिखा दो श्रीराम जी 32
9. दरस दे सफल करो 32
10. दरसन आके दो 33

11.	दास की आस	34
12.	दास की पुकार	34
13.	दीन की पुकार	35
14.	दे चरण शरण	35
15.	नैया नाथ बचा लीजे	36
16.	प्रभु जी इतना ना तरसाओ	36
17.	प्रेम के भूखे हैं भगवान	37
18.	फिकर क्यों करे	37
19.	व्यर्थ मत जीवन खो	38
20.	बहुतक नचाया राम	38
21.	भक्ति अंकुर	39
22.	भजन धनुधारी का	39
23.	भारत की रक्षा करनी है	40
24.	भरोसा तेरे चरणों का	40
25.	भक्ति दे झोली भरो	41
26.	भोलनाथ कहाँ हो	41
27.	भज ले शिव भगवान	42
28.	भजु हरि पावन नाम	42
29.	भक्त-भगवान संवाद	43
30.	माया में ना फँसना	43
31.	माया अजब तिहार	44
32.	राम सुनते हैं सबकी	45

33. विश्वास टूट नहीं सकता 45

34. शम्भो, सुनि लो विनय हमारी 46

35. शिव–शिव भज 46

36. सदा सहारा तेरा 47

37. हे भोले त्रिपुरारी 47

38. हे राम धनुधारी 48

39. हे राम रघुराई 48

40. हे राम रघुराया 49

41. हे राम सहारा तेरा 49

भाग ३ : कीर्तन

1. आर्न्त पुकार 51

2. नाम गुणगान 54

3. प्रभु पर भरोसा 56

4. प्रभु की झाँकी 57

5. प्रभु का सहारा 58

6. प्रभु से प्रश्न 59

7. प्रभु से माँग 60

8. प्रभु समर्पण 65

9. मन का प्रबोधन 66

सुनि लो करुण पुकार 71

परम प्रभु से प्रार्थना 72

भाग 1 : दोहा

1. अर्चना

मंगल मूल गणेशजी, प्रनवहु बारम्बार।
करहु कृपा जन जानि अब, हे जगदम्ब कुमार।।1।।

परम पूज्य गुरु–पद–कमल, वंदहु सहित समाज।
जिनकी कृपा कटाक्ष से, शिव उर रहें विराज।।2।।

जै जगदम्बै शैलजा, जय–जय मातु भवानि।
करहु कृपा अब दीन पर, दास आपनो जानि।।3।।

आशुतोष प्रभु शम्भु जय, जय–जय गौरीनाथ।
चरण शरण देकर प्रभो, कीजे हमें सनाथ।।4।।

रघुवर सियपति अवधपति, मायापति सुखधाम।
हृदय कंज महँ बसहु नित, प्राणप्यारे राम।।5।।

जय–जय माता जानकी, जनकसुता महारानि।
आदिशक्ति अविनाशिनी, जननी सद्‌गुण खानि।।6।।

मातु कृपा करि बाल पर, स्नेह सुधा बरसाय।
निज कर कमलन गोद ले, ममता मोद बहाय।।7।।

आशुतोष मदनारि जय, नीलकंठ महाराज।
विमल भक्ति पद कमल की, देके राखहु लाज।।8।।

काम क्रोध मद लोभ सब, कीजे दूर तुरन्त।
ममता मोह विलासिता, इनका होवे अन्त।।9।।

विघ्नहरण मंगलकरन, गिरिजासुत महाराज।
दास तिहारी हे शरण, राखहु जन की लाज।।10।।

2. अविरल भक्ति

भोलेश्वर भव दुख हरण, दीनानाथ सुजान।
सुजस व्याप्त तिहुँ लोक महँ, गावत वेद पुरान।।1।।

दाता तुम सम और को, नहीं है तीनों लोक।
शरण जान अब दास को, करो विगत भय शोक।।2।।

सदा सहारे आपके, हे भोले सरकार।
नैया तेरे हाथ है, कर दीजै प्रभु पार।।3।।

मैं पापी तुम पापहर, अब न सोच लवलेश।
शरण आपकी गह लई, भोले शंभु महेश।।4।।

बस केवल यह माँगना, नेहा रहे अटूट।
ऐसी भक्ती दीजिए, जाय कभी नहिं छूट।।5।।

3. और न कोई आसरा

औघड़दानी शम्भु जी, मेरे सब कुछ आप।
शरण तिहारी नाथ अब, मेटहु जन परिताप।।1।।

आशुतोष हो तुम प्रभो, अब विलम्ब केहि काज।
दूर पड़ा कब से प्रभो, जानो सच महाराज।।2।।

अब नहिं अधिक रुलाइये, कृपासिंधु भगवान।
दया करो प्रभु दीन पर, दीजे भक्ति सुजान।।3।।

नहीं सिफारिस और की, तुम बिनु भोलेनाथ।
और न कोई आसरा, मुझको दीनानाथ।।4।।

तुमसे भी हे नाथ अब, कहा न कुछ भी जाय।
जानत जन की पीर तुम, वेगहि दे मिटाय।।5।।

बार बार विनती यही, मिले कुसंग न साथ।
दिन प्रतिदिन पद प्रेम हो, पशुपति गौरीनाथ।।6।।

4. अंखियाँ तरसैं

सेवक स्वामी प्रिय सखा, रघुवर के गौरीश।
स्वामी गुरुवर दास के, हर भक्तन के ईश।।1।।

माया अगम अपार अति, प्रबल प्रचंड पुरारि।
आन उबारो दीन को, करुणाकर त्रिपुरारि।।2।।

बाल धूर धूसित सदा, जननी उर न ग्लानि।
हृदय लगावत प्रेम से, शिशु अबोध अनुमानि।।3।।

शिशु जिमि प्रभु नादान मैं, लीजे गोद उठाय।
दास आपना जानि प्रभु, करिये सदा सहाय।।4।।

अंखियाँ तरसै रैन दिन, दीजे दरसन आय।
प्रेम पियाला दो पिला, अविरल भक्ति दृढ़ाय।।5।।

5. दान-सत्संग

जय जय गणपति गौरिसुत, जय जय मंगलखान।
लज्जा राखो दास की, दे सुबुद्धि-भगवान।।1।।

अन्तरयामी नाथ शिव, मन की जाननहार।
पूर्ण कामना दास की, कीजे हे त्रिपुरारि।।2।।

औघड़दानी शम्भु जी, सुनिए करुण पुकार।
डूब रहा भवसिन्धु में, लीजे आन उबार।।3।।

विपदाओं से चक्र से, जान्यो ये संसार।
कृपादृष्टि कर नाथ अब, हरिये संकट भार।।4।।

दुख सम साधन और नहिं, नाम रटावत नाथ।
तदपि दयामय दूर दुख, कीजे भोलेनाथ।।5।।

ऐसा ही ऐश्वर्य दो, हे भोले सुरताज।
गुजर बसर कर दान दूँ, और न दूसर काज।।6।।

मन में इच्छा दान की, हाथ न कछू दिखाय।
प्रभु इतनी सम्पत्ति दो, यह इच्छा रह जाय।।7।।

मन वांछित धन सम्पदा, दीन्हीं भोलेनाथ।
अब सतपात्र लखाइए, देउँ दान दोउ हाथ।।8।।

दयाधाम दो भक्तिवर, हमको शंभु सुजान।
सत्संगति नित-प्रति मिले, भोलेश्वर भगवान।।9।।

6. दुःख से छुटकारा

मेटत विधि के अंक भी, अपने भक्तन काज।
धन-धन ऐसे नाथ को, राखत जन की लाज।।1।।

हृदय अगम दुःख है हुआ, कारण जानत आप।
करहु कृपा अब दीन पर, मेटहु दुख संताप।।2।।

सुदृढ़ भरोसा है किया, अन्तरयामी नाथ।
दुख-अपयश अरु दीनता, हरिये गौरीनाथ।।3।।

अब किससे विनती करूँ, तुम बिन हे मदनार।
कौन सुनेगा जगत में, स्वारथरत संसार।।4।।

औघड़दानी नाथ तुम, महादानि महाराज।
दुख ज्वाला से जरत नित, करिये शीतल आज।।5।।

7. दृढ़ अनुराग

आशुतोष भगवान शिव, भोले शंभु पुरारि।
दर पै आये जानि प्रभु, राखहु लाज हमारि।।1।।

औघड़दानी नाथ से, क्या माँगूं वरदान।
नहीं ज्ञान नादान हूँ, तुम्हीं देहु भगवान।।2।।

घट-घट वासी हृदय की, मन की जाननहार।
तुम्हीं उबारो दीन को, मन वांछित दातार।।3।।

रवि को क्या दीपक दिखा, करूँ भला अपमान।
प्रकट कहत नहिं आपसों, जानहु परम सुजान।।4।।

क्षण-क्षण नव अनुराग दृढ़, उपजहि मन महँ नाथ।
अस वर दीजे दास को, गौरी भोलेनाथ।।5।।

8. नैया प्रभु के हाथ

प्रियतम प्यारे राम के, गौरी प्राणाधार।
दया करो शिशु पर सदा, बरधा के अवसार।।1।।

आशुतोष दसभुज प्रभो, पंचानन त्रिपुरारि।
चरण कमल रज दान कर, राखो लाज हमारि।।2।।

हम पापी कलि के सभी, नहिं बल जप-तप-ध्यान।
नाम भरोसो दिवस निशि, द्रवहु शम्भु भगवान।।3।।

नैया तेरे हाथ है, तू रक्षक मदनार।
अब हमको चिन्ता नहीं, कैसहु लागे पार।।4।।

सुख-दुःख सम समझूँ सदा, शान्त रहे मन मोर।
रटूँ नाम क्षण-क्षण प्रभो, हरदम प्रेम विभोर।।5।।

प्राणप्यारे राम की, विमल भक्ति अब देहु।
जान बाल इस दास पर, रखिये सदा सनेहु।।6।।

9. प्रभु से रुदन

असत् जगत् में सार इक, केवल प्रभु का नाम।
रे मन प्रेम से, भोले शिव सुखधाम।।1।।

पग-पग पर रक्षा करत, तुम गौरी भर्तार।
चरण शरण अब चाहता, सुनिये करुण पुकार।।2।।

चाह नहीं सुख मान की, जानहु दीनानाथ।
प्रेम सुधा छलकाय के, करिए हमें सनाथ।।3।।

अँखियाँ तड़पैं दरस बिनु, हृदय बीच अकुलान।
चित्त तुम्हारे चरण महँ, द्रवहु शीघ्र भगवान।।4।।

नाथ अनाथन हेतु अब, पुनि आवहु इक बार।
पड़े सभी भव-जाल में, निज कर लेहु उबार।।5।।

बाल करुण क्रन्दन करत, टेरत है जिमि मात।
तुम्हें पुकारें हम सदा, रुदन करें दिन-रात।।6।।

अब नहिं देर लगाइये, शीघ्र द्रवहु भगवान।
दरस दिखाकर दीजिए, विमल भक्ति वरदान।।7।।

10. प्रभु-नाम में मगन

जय गणनायक गजवदन, विद्यानिधि भगवान।
लाज रखो इस दीन की, संतत कृपा निधान।।1।।

हे शारद मातेश्वरी, वीणाधरि महारानि।
कृपा अनुग्रह करहु नित, दास अपनो जानि।।2।।

जय जय भोलेनाथ जय, दीनन के आधार।
गौरीपति त्रिपुरारि शिव, भक्तन के रखवार।।3।।

झांकी अनुपम आज की, शोभा वरनि न जाय।
पुलकित तन-मन हो गया, प्रेम न हृदय समाय।।4।।

राम चरण रति नाथ अब, दीजे शिव भगवान।
झोली लेकर भीख की, आये तुअ दरम्यान।।5।।

विमल भक्ति दो करि कृपा, भोले शिव भगवान।
दीन जानि शरणा प्रभो, लीजे दयानिधान।।6।।

रहित सकल दु:ख-दोष हों, करे सदा गुणगान।
रहें मगन प्रभु नाम में, दीजे अस वरदान।।7।।

11. प्रभु झांकी

धन सम्पति परिवार सुख, तन सुख मन विश्राम।
बिनु शिव सेये ना मिले, भक्ति बिना हरिनाम।।1।।

श्रम अर्जित सम्पत्ति बिनु, सब सुख दुख के धाम।
बिना धर्म धन व्यर्थ है, जीवन बिनु हरि नाम।।2।।

पूरब पुण्य प्रताप से, शिव के भजन प्रसाद।
अनुपम रचना होत जब, निरखि बढ़त आह्लाद।।3।।

गुरुवर चरणन शीश धर, प्रनवहुँ बारम्बार।
शिवजी जिन पर तुष्ट हैं, चहुँ दिसि मंगलचार।।4।।

अतिशय अद्भुत दिव्य है, झाँकी परम अनूप।
पन्नगधर मदनार प्रभु, बैठे शिव सुर भूप।।5।।

धन्य-धन्य हम सबन्ह को, आये शिव दरबार।
निरखि-निरखि अनुपम छटा, उमगत प्रेम अपार।।6।।

12. प्रभु वियोग

घट-घट वासी शंभु जी, मन की जाननहार।
यदपि न जोग वियोग कछु, मन महँ वास तुम्हार।।1।।

गुरुवर चरणन ध्यान है, शंकर भोलेनाथ।
आज्ञा सिर पर आपकी, भोले गौरीनाथ।।2।।

भजन कीर्तन बिनु प्रभो, धैर्य धरो नहिं जाय।
औघड़दानी कर कृपा, लेहु समीप बुलाय।।3।।

बालक नाथ अजान अति, जानत ज्ञान न ध्यान।
तासों व्यथा वियोग की, सह न जाइ भगवान।।4।।

बचपन बीता युवापन, पाया आयो भार।
पर तेरा मैं शिशु सदा, कीजे बेड़ा पार।।5।।

जो जो जिम्मेवारियाँ, आती हैं मम पास।
भेजूँ सबको तोहि पहँ, कीजे नहीं निरास।।6।।

13. प्रभु प्रेम

शिशु माता सन सब कहत, हमें सम्हालो मात।
जननी खुद दिल से लगा, चुम्बत उसके गात।।1।।

अस उर धर लवलेश नहिं, मन महँ सोच विचार।
जिसके सिर पै भार है, जाने वे मदनार।।2।।

बिनु माँगे माँ बाल को, असन बसन कर ख्याल।
शिशु को निज गोदी उठा, रखती सदा निहाल।।3।।

शिशु को हृदय लगाय कर, पावत मातु अनन्द।
बाल सदा निश्चिंत रह, कर कौतुक स्वच्छन्द।।4।।

मातु प्रेम-सा नाथ का, जानो नेह सुजान।
तज संशय अरु वासना, भजहु इष्ट भगवान।।5।।

माता के स्नेह से, भारी प्रभु का नेह।
तज ममता मद मान अब, अपनो देह न गेह।।6।।

14. प्रभु से विनती

परम पूज्य गुरु पद कमल, बंदहुँ बारम्बार।
कृपा अनुग्रह दास पर, करते सदा अपार।।11।

हरि भक्तन के दरस पा, मन अति रहा लुभाय।
परम तोष पा आत्म-सुख बार-बार हरषाय।।2।।

प्रेम मगन हो शंभु धुनि, गाकर हृदय जुड़ात।
सुधि करि-करि प्रभु प्रेम की, हरष न हृदय समात।।3।।

पापी अधमी नाथ मैं, जो हूँ इतना दूर।
दरसन को नित तरसता, परवस हूँ मजबूर।।4।।

विरह व्यथा जब तक लिखी, सहता सभी हुजूर।
दरस दिखाओ नाथ अब, मोर न कछू कसूर।।5।।

नाथ कृपा कर अरज इक, सुनिये शिव भगवान।
सत्संगति मिलबै सदा, गाऊँ तुअ गुणगान।।6।।

15. प्रभु दर्शन

जय गजमुख गणराज प्रभु, जय मंगल कर्तार।
विघ्न विनाशन बुद्धिप्रद, सद्‌गुण के भंडार।।1।।

जय गौरी के लाड़ले, मोदकप्रिय भगवान।
विघ्नहरण प्रभु विघ्नहर, शिवसुत मंगलखान।।2।

जय भोले सरकार प्रभु, औघड़दानी नाथ।
जय गौरी जय जानकी, जय शिवप्रिय रघुनाथ।।3।।

मेरे प्राणाधार प्रभु, सीतापति भगवान।
दरस दिखाओ नाथ अब, हमको कृपानिधान।।4।।

मंगलमय भगवान शिव, दारिद मेटनहार।
दु:ख दारिद अब मेटिए, वरधा के असवार।।5।।

करहु दया अब दीन पर, दीनानाथ खरारि।
विमल भक्ति सत्संग नित, मिले हमें त्रिशिरारि।।6।।

16. प्रभु से मांग

रे मन अब तू समझ ले, झूठा सब संसार।
भजन करो हरि का सदा, भव से हो जा पार।।1।।

पर मन मानत बात नहिं, विषयन में रत रोज।
क्रोध लोभ मद मोह वश, ममता ग्रस्त मनोज।।2।।

चित चंचल अति चपल गति, दुस्तर दुष्ट प्रधान।
तुम्हीं उबारो नाथ अब, दीनबन्धु भगवान।।3।।

इक तो कलि का पातकी, दूजे ज्ञान न ध्यान।
चरण शरण अब गह लई, अपनाओ भगवान।।4।।

औघड़दानी शम्भुजी, लीजे खबर हमार।
तन–मन–धन सब आपका, मैं तेरा सरकार।।5।।

चरण कमल रज चाहता, दीजे भोलेनाथ।
द्रवहु नाथ अब दास पर, कीजे इसे सनाथ।।6।।

17. प्रभु से नाता

परम पिता परमात्मा, प्रनवहु प्रभु कर जोर।
दरस दिखाओ नाथ अब, तड़पत जियरा मोर।।1।।

बिनु देखे अनुपम छटा, मुख मंडल की नाथ।
कहहु चैन कहँ हृदय में, दीनबंधु रघुनाथ।।2।।

कण–कण में व्यापक तुम्हीं, रूप अनेक सुजान।
तदपि बसहु मन में सदा, हे प्रियतम भगवान।।3।।

प्रभु अब नहिं तरसाइए, कृपासिंधु भगवान।
दरसन दीजे दास को, भोले परम सुजान।।4।।

गिनहु न मोरे दोष प्रभु, लेहु शरण गौरीश।
नाता चाहूँ ये सदा, मैं सेवक तुम ईश।।5।।

18. भव्य झाँकी

यह सब सद्गुरु की कृपा, हुआ प्रकट अनुराग।
शिव चरणों की ली शरण, खुले हमारे भाग।।1।।

लख सच्चा अनुराग शिव, आये दर पर नाथ।
डूड़ा बैल सवार हो, लाये गौरी साथ।।2।।

झाँकी शिव की भव्य है, मन अति रह्यो लुभाय।
जन्म सफल अब हो गया, प्रभु के दरसन पाय।।3।।

वाम भाग में शैलजा, गोद में लिये गणेश।
कर त्रिशूल डमरू लिये, बैठे शम्भु महेश।।4।।

भस्म रमाये सकल तन, पहरें गले भुजंग।
बाघम्बर कटि पर लसत, धरें शीश पै गंग।।5।।

चन्द्र छटा है भाल पर, नहिं छवि वरणी जाय।
झाँकी प्रभु की देखकर, प्रेम न हृदय समाय।।6।।

बार बार कर जोर कर, विनय करूँ भगवान।
हो प्रसन्न दीजे हमें, भक्ती का वरदान।।7।।

रहे बना अनुराग नित, चरणों में महाराज।
दुख दारिद अब मेटि कर, राखो जन की लाज।।8।।

रहूँ सदा सत्संग में, करूँ सदा गुणगान।
हृदय प्रेम रस हो भरा, दीजे ये वरदान।।9।।

विमल भक्ति श्रीराम की, मिले हमें भगवान।
बार-बार कर जोरकर, माँगूँ यह वरदान।।10।।

19. भक्ति लालसा

जय जय भोले नाथ शिव, जय जय प्रभु त्रिपुरारि।
दीन-बन्धु हो जानि अस, आये शरण तिहारि।।1।।

अपने-अपने करम वश, विचरैं जीव जहान।
सूत्रधार सबके तुम्ही, कृपासिंधु भगवान।।2।।

कीजे भोले पार अब, नैया तेरे हाथ।
दयासिन्धु भगवान शिव, शम्भू भोलेनाथ।।3।।

नहीं लालसा और कुछ, केवल भक्ति की चाह।
कब दोगे इस दास को, निशिदिन देखत राह।।4।।

कीजे मंगल शंभु जी, घर-घर अब भगवान।
तृप्त करहु सब जनन को, करा भक्ति-रस पान।।5।।

20. भक्त की चाह

चातक रटना छोड़ दे, हो निराश मन माँह।
पर प्रभु हमको आस है, सुखदा शरणा छाँह।।1।।

कपटी पापी जानि मोहि, नहि त्यागहु हे राम।
हृदय-व्योम महँ चंद जिम, विचरहु प्रिय सुखधाम।।2।।

कण-कण में तुअ वास है, कहँ पर खोजों तोहि।
शीघ्र द्रवित अब होइये, क्यों भटकाते मोहि।।3।।

कठपुतली सम जगत को, सदा नचावत आप।
अब नहि अधिक नचाइये, मेटहु जन-परिताप।।4।।

अपने-अपने करम बस, बँधे जीव सब नाथ।
कब ये बन्धन काटि कर, करिहो हमें सनाथ।।5।।

मुख मंडल कब निरखिकर, शीतल होइहैं नैन।
तुम्हीं कहो कैसे प्रभो, पाऊँ तुम बिनु चैन।।6।।

21. भक्ति की आस

भूला भटका जगत से, शरणा आया नाथ।
दीनानाथ कृपालु शिव, कीजे दास सनाथ।।1।।

प्रभु जी निज मन की व्यथा, किससे कहूँ सुनाय।
चरण कमल तक दौड़ है, और न कछू बसाय।।2।।

भजन तिहारा नित करैं, तज ममता मद मान।
ऐसा ही वर दीजिए, हमें शंभु भगवान।।3।।

जग सुख की तो चाह नहिं, विमल भक्ति की आस।
दर पै बैठा दास ए, कीजे नहीं उदास।।4।।

हरदम क्षण-क्षण शंभु जी, रहे तुम्हारा ध्यान।
प्रेम मगन मन दिवस-निशि, करूँ नाम गुणगान।।5।

केवल उत्कट चाह ये, यही आस महाराज।
मेरे सब कुछ नाथ तुम, देहु भक्ति सुरताज।।6।।

22. भजहु राम सुखधाम

कोटि जपत कोइ करि थके, मन नहिं होत पुनीत।
कृपा अनुग्रह के बिना, मिलै न प्रभु की प्रीत।।1।।

अगम अगाध अपार अति, भवसागर गंभीर।
राम नाम प्रभु वाण सम, सोखे सागर नीर।।2।।

जप तप पूजा ध्यान नहिं, केवल नाम अधार।
करूँ नाम गुण दिवस निशि, करहु वेगु निस्तार।।3।।

बिना शम्भु की कृपा से, मिलै न भक्ति सुजान।
अस विचारि मन भज सदा, भोलेश्वर भगवान।।4।।

मृगतृष्णा सम जगत के, सुख साधन आराम।
व्यर्थ नहीं फँसना कभी, भजहु राम सुखधाम।।5।।

23. मन की चाह

पड़ा अकेला नाथ मैं, तुम ही सदा सहाय।
सदा दास पर नेह हो, रहियो कुपंथ बचाय।।1।।

शम्भु सहारा है हमें, तू ही रक्षक नाथ।
बार-बार विनती करूँ, चरणन नाऊँ माथ।।2।।

बस केवल ये माँगना, चरण कमल नित नेह।
बसहु सदा शशिधर प्रभो, हृदय माझ कर गेह।।3।।

भजन सदा निशिदिन करें, रहें तिहारी आस।
भक्ति मिले अनपायनी, उपजै दृढ़ विश्वास।।4।।

मन मंदिर में चापधर, बसिये सीताराम।
चाह यही मन की सदा, पूर्ण करो सुखधाम।।5।।

24. लेकर नाम आधार

भवसागर अति अगम है, निर्बल खेवनहार।
जीर्णतरी नौका प्रभो, तुमही कीजे पार।।1।।

हृदय भरोसा आपका, दूसर नहीं उपाय।
कृपा करहु अब दीन पर, लीजो आन बचाय।।2।।

सन्त–दरस अरु हरि–कथा, मिलै नित्य भगवान।
घट–घट वासी शम्भु जी, भोले परम सुजान।।3।।

भवबाधा अब दीन की, कीजे दूर महेश।
नाम राम का दिवस निशि, जपते रहे हमेश।।4।।

चन्द्रमौलि चिन्ताहरण, दुःख निवारन हार।
विश्वनाथ पशुपति प्रभो, वरधा के असवार।।5।।

रहूँ सदा सत्पंथ पर, लेकर नाम अधार।
पग–पग पर रक्षा करहु, शरणा नाथ तिहार।।6।।

25. बसहु हृदय दरम्यान

औघढ़दानी शिव शंभु जी, चरनन नाऊँ माथ।
करहु कृपा जन जानि अब, कीजिये नाथ सनाथ।।1।।

तुम औघड़दानी सदा, क्या माँगूँ सरकार।
ठीक लगे जो आपको, सो दीजे मदनार।।2।।

चाह यही मेरी सदा, रहूँ आपके पास।
तुम स्वामी बनकर रहो, मैं हूँ तेरा दास।।3।।

घट घट जाननहार हो, जानहु तुम सब बात।
अस जिय जानि न कहत कछु, लाज रखो हे तात।4।।

अग–जग में व्यापक तुम्हीं, मायापति भगवान।
गुणागार गुण से परे, जगपति कृपानिधान।।5।।

सब के रक्षक शोकहर, सुखदाता महाराज।
पीर दास की हरहु प्रभु, जन के हृदय विराज।।6।।

शरणा तेरी ही गही, नहिं तजिये भगवान।
गणपति गौरी के सहित, बसहु हृदय दरम्यान।।7।।

26. वांछित फल

गणपति गजमुख गौरिसुत, मंगल खान गणेश।
कृपा अनुग्रह दास पर, रखिये प्रभो हमेश।।1।।

वीणाधर बुधिदायिनी, शारद माँ गुणखानि।
सद्बुधि दे झोली भरो, दर पै आया जानि।।2।।

मुरलीधर घनश्याम जय, गिरधारी गोपाल।
गीता पाठ पढ़ाइए, मिटै सकल जंजाल।।3।।

गनपति गौरी साथ शिव, दरसन दीजे नाथ।
बार–बार कर जोरि कर, चरणन नाऊँ माथ।।4।।

लक्ष्मण अरु सीता सहित, धनुधारी भगवान।
दरसन दे सब जनन को, रखो विरद की आन।।5।।

गायत्री सुखदायिनी, आदि शक्ति महारानि।
बुद्धि–ज्ञान दीजे हमें, शरणन आया जानि।।6।।

जय–जय डमरूधर प्रभो, बम–बम भोलेनाथ।
भक्ति विमल दे दीन को, कीजे प्रभो सनाथ।।7।।

धनुधारी रघुवर प्रभो, सीतापति भगवान।
वांछित फल दीजे हमें, भक्ती का वरदान।।8।।

27. विमल भक्ति

रूप अनुपम आपका, चाहत देखन नाथ।
मन इच्छित ये लालसा, पूर्ण करो गिरिनाथ।।1।।

सदा तिहारे आसरे, तुअ शरणा महाराज।
हरदम है संतोष प्रभु, रहिये हृदय विराज।।2।।

नाथ हमें क्या माँगना, बिनु माँगे तुम देत।
बस केवल ये कामना, मन महँ करहु निकेत।।3।।

विषय जाल जग में बिछे, कभी फँसे नहिं नाथ।
बार-बार विनती यही, सुनिये गौरीनाथ।।4।।

सुख-दुःख सब प्रारब्ध बस, मिले हमें सरकार।
दुःख रज सम सब कर दिये, सुख का नित विस्तार।।5।।

दुःख दारिद से भय नहीं, मन महँ हे मदनार।
सुख-दुःख सब सम से लगें, ये वर दो सरकार।।6।।

पुनः नाथ कर जोरि जुग, विनय करूँ भगवान।
विमल भक्ति दे हृदय महँ, सदा विराजहु आन।।7।।

28. सत्संग की चाह

सद्गुरुवर पद सुमरि करि, प्रभु का ध्यान लगाय।
कहउँ व्यथा मन की सुनहु, जो नित रही सताय।।1।।

यदपि गुरूजी ने कहा, होना नहीं उदास।
तदपि नाथ सत्संग बिनु, बुझत न मन की प्यास।।2।।

चाह नहीं सुख की प्रभो, नहि भय दुख से नाथ।
बस केवल सत्संग नित, दीजे भोलेनाथ।।3।।

औघड़दानी नाथ तुम, सकल चराचर ईश।
सुनहु विनय इस दास की, डमरूधर, गौरीश।।4।।

इस मिथ्या भवजाल में, फँसे नाथ सब लोग।
सहते रहते दिवस-निशि, भव रुज दुःख वियोग।।5।।

क्षणभंगुर इस देह के,प्रति न मोह लवलेश।
रहे कदाचित अब हमें, सुनिए विनय महेश।।6।।

रंगे रहें हरि प्रेम में, निशिबासर भगवान।
क्षण-क्षण हो अनुरागमय, मागउँ ये वरदान।।7।।

29. दर्श की आस

जय सत् चित् आनन्द घन, जय जय जगदाधार।
जय जय बम-बम शम्भु हर, भोले शिव त्रिपुरार।।1।।

जय अविनाशी शोक हर, दाता भोलेनाथ।
अब सुधि लो इस दास की, प्यारे गौरीनाथ।।2।।

प्राणनाथ सरकार मम, दीनन के रखवार।
दरस दिखाओ नाथ अब, करि करुणा इक बार।।3।।

जियरा तड़पै दरस को, हे भोले भगवान।
अब सुधि लीजे जगतपति, दीनानाथ सुजान।।4।।

घट-घट वासी नाथ तुम, कण-कण वास तुम्हार।
झाँकी अनुपम दो दिखा, करके प्रेम दुलार।।5।।

जन-मन पंकज मधुप बन, बसते नाथ हमेश।
हमें दरस दो आय कर, भोलेनाथ महेश।।6।।

भाग 2 भजन

1. अमन कैसे मिले

अमन जिधर रखा उधर जाते नहीं, अमन कैसे मिले।
लगन राम जी से लगाते नहीं, अमन कैसे मिले।।1।।

भूले सभी हैं हम अपने करम बस।
फन्दे में भव के फँसे हैं जकड़कर।।
दुखियों से नेहा लगाते नहीं, अमन कैसे मिले।।2।।

स्वारथ बनाने में मन है लगाया।
प्रभु नाम कबहूँ न सपने में भाया।।
होके मनुज मन जगाते नहीं, अमन कैसे मिले।।3।।

दुखियों को स्वार्थवश हरदम सताते।
दीन–हीन निर्बल के दिल को दुखाते।।
दलितों को दिल से लगाते नहीं, अमन कैसे मिले।।4।।

झूठ–कपट, दाव पेंच में मन समाया।
अपने फँसाने को जाल खुद बिछाया।।
नेक कर्म मन में कभी आते नहीं, अमन कैसे मिले।।5।।

सच्चा न प्यार जिन्हें देश–धर्म मानव से।
ऊपर से सौम्य रूप, कर्म करे दानव के।।
सोई हुई शक्ति जगाते नहीं, अमन कैसे मिले।।6।।

अहं भाव भरा पड़ा, सागर से भारी।
अपने लिए मारी, सबके कंठ पै कुठारी।।
स्वारथ बिनु नाते सुहाते नहीं, अमन कैसे मिले।।7।।

परहित करो और प्रभु नाम गाओ।
निस्वार्थ मानव की सेवा अपनाओ।
सद्गुण कभी तुमको भाते नहीं, अमने कैसे मिले।।8।।

कहैं दास अब तो भजो राम प्यारे।
माता पिता भाई बंधु प्रियतम हमारे।।
मन से ये माया हटाते नहीं, अमन कैसे मिले।।9।।

2. आओ भोले शंकर

आओ आओ भोले शंकर, आओ आओ भोले शंकर।
आके भोले सब दुखियन के, बिगड़े काज बनाओ।।
भूले सब तेरी माया में, इससे उन्हें बचाओ।।
आओ.....।।1।।

दीन–दुखी हम खड़े द्वार पै, अब तो पार लगाओ।
विनय करें कर जोर प्रभू जी, सच्ची राह दिखाओ।
आओ......।।2।।

पड़े मोह–भ्रम में हम सब जन, ये सब दोष मिटाओ।
तुम्हें पुकारे क्षण–क्षण भोले, अब तो दरस दिखाओ।।
आओ.....।।3।।

नाथ किया विश्वास हिए जो, उसको आन निभाओ।
सत्संगति दो हमको प्यारे, भक्ति सुधा बरसाओ।।
आओ.....।।4।।

आए शरणा सभी दीन हम, अब हमको अपनाओ।
दास पड़ा चरणों में भोले, कर कमलों से उठाओ।।
आओ....।।5।।

3. कब तक लोगे खबर हमारी

कब तक लोगे खबर हमारी।
रघुपति राघव धनुधारी।।

बहुत दिखाया अब क्या बाकी, सीतापति रघुराई।
अब न दुखाओ दुखिया दिल को, दीजे दरस दिखाई।।
इतनी विनय सुनो असुराई। रघुपति.....।।1।।

निशि दिन आस लगाये बैठा, अब तो झलक दिखाओ।
लखन जानकी साथ में लेके, प्यारे दर पर आओ।।
अब तो आस लगी भारी। रघुपति.....।।2।।

झाँकी देख तन-मन हों पुलकित, करहु कृपा अस स्वामी।
मेरे मन मंदिर में हरदम, बसियों अन्तरयामी।।
इतनी अरज है नाथ हमारी। रघुपति....।।3।।

4. जीवन सौंप दिया

जीवन सौंप दिया प्यारे। उमापति शम्भो मदनारे।
प्रीत लगाकर नाथ न भूलो, सुनि लो विनय हमारी।
अगम अगोचर मन वाणी से, कैसे करूँ तुम्हारी।।
विनती भोले त्रिपुरारे। उमापति....।।1।।

भला-बुरा कैसा भी हूँ मैं, शरणा नाथ तिहारी।
आशुतोष प्राणेश्वर मेरे, जगदाधार पुरारी।।
भोले जगपति नाथ हमारे। उमापति....।।2।।

चंद्र विभूषन भाल पै सोहे, गले में है मुंडमाला।
जटा में पतित पावनी गंगा, भोले डमरूवाला।।
गले में पड़े नाग कारे। उमापति....।।3।।

दयाधाम औघड़दानी प्रभु, देते सदा सहारा।
माता पिता भाई बंधू सब तू ही हितू हमारा।।
दास की सुनि लो विनय पुरारे। उमापति.....।।4।।

5. डूबती नैया

विपदा चारों ओर से घेरे, भोले नाथ बचा लीजे।
इस डूबती नैया को स्वामी, अपने कर पार लगा दीजे।।
तुम बिनु नाथ सुनावें किसको, औघड़दानी त्रिपुरारी।
नीलकंठ गिरिजा के प्यारे, डमरूधर शिव मदनारी।।
अनहितकारी होनहार सब मेटि चरण रज दे दीजे।
इस डूबती....।।1।।

कौन सुनेगा अब इस जग में, तुम बिनु भोले स्वामी।
पूर्ण कामना करो दास की, नीलकंठ अन्तरयामी।।
कर दूर दुःख श्री रामचन्द्र की अविरल भक्ती दे दीजे।।
इस डूबती.....।।2।।

6. तुम्हें कहाँ हम पावें

तुम्हें कहाँ हम पावें भगवन, तुम्हें कहाँ हम पावें।
विरहव्यथा में तड़पें निशिदिन, नैनन नीर बहावें।।
भगवन तुम्हें कहाँ.....।।1।।

भरा प्रेम रस तन घट भीतर, तुम बिनु किसे दिखावें।
जीर्णतरी ये नौका भगवन, पग-पग पर विचलावें।।
भगवन तुम्हें कहाँ.....।।2।।

मेरे मन-मंदिर के स्वामी, हम कैसे बिसरावें।
तुम्ही बताओ करुणामय शिव, बिना आस कहँ धावें।।
भगवन तुम्हें कहाँ.....।।3।।

नेहा नाथ लगाया तुमसे, अब किसके दर जावें।
दीन–दयाल दया के सागर, सोइ करु हृदय जुड़ावें।।
भगवन तुम्हें कहाँ.....।।4।।

व्यथित हुआ मन रघुवर प्यारे, किस दर जाय सुनावें।
शक्ति हमें दो दया के सागर, ममता मोह नसावें।।
भगवन तुम्हें कहाँ.....।।5।।

भक्ति पुष्प मकरंद पान को, बनकर भ्रमर लुभावें।
भगवन तुम्हें कहाँ हम पावें, भगवन तुम्हें कहाँ हम पावें।।6।।

7. तेरी शरण आया

तेरी शरण आया भोले, तेरी शरण आया।
लख के अनाथ नाथ, मुझको अपनाओ।।
औघड़दानी भोले ऐसी दया दिखलाओ।
अब तो नाथ पार करो, दर–दर ठुकराया।
तेरी शरण.....।।1।।

हिये में है आशा, दया कीजे शंकर।
भक्ती की भिक्षा दे, झोली को भरकर।।
चन्द्रशेखर दया कर बहुतक भरमाया।
तेरी शरण.....।।2।।

पापी हूँ, अधमी हूँ, क्षमा करो भगवान।
पापहारी नाथ तुम, जाने ये त्रिभुवन।।
संकट को काट नाथ, अब तक दुःख पाया।
तेरी शरण.....।।3।।

रो–रो पुकारूँ नाथ, दयामय सुनिये।
चरण शरण दीजे हमें, अवगुण न गिनिये।।
तजिये न नाथ दास, चरणन लिपटाया।
तेरी शरण.....।।4।।

8. दरस दिखा दो श्रीराम जी

हम सबको दरस दिखा दो, दिखा दो, दिखा दो श्रीरामजी।
जियरन की जरन जुड़ा दो, जुड़ा दो, जुड़ा दो, श्रीरामजी।।
तेरे दरस बिनु अँखियाँ प्यासी।
निशिदिन ही रहती हैं उदासी।।
नैनों की प्यास बुझा दो, बुझा दो, बुझा दो, श्रीरामजी।
हम सबको....।।1।।

मात पिता गुरु प्यारे नाता।
तुम्हीं हो सब कुछ मेरे त्राता।।
अब तो गोद बिठा लो, बिठा लो, बिठा लो, श्रीरामजी।
हम सबको.....।।2।।

चरण कमल की भक्ति दीजे।
नाथ अनाथन शरणन लीजे।।
सब भव रोग मिटा दो, मिटा दो, मिटा दो, श्रीरामजी।
हम सबको.....।।3।।

दास विनय हे करता स्वामी।
भक्ति विमल दो अन्तरयामी।।
दीन को दास बना लो, बना लो, बना लो, श्रीरामजी।
हम सबको.....।।4।।

9. दरस दे सफल करो

दरस दे सफल करो मदनार, नहीं तो जीवन है बेकार।
हम कलियुग के पापी अधमी, जानें ज्ञान न ध्यान।
केवट बनकर पार लगाओ, ये नौका भगवान।।
नाम का है केवल आधार, नहीं तो जीवन हैं बेकार।।1।।

पाप की गठरी भारी स्वामी, हमसे चलो न जात।
आन उबारो अब प्रभु इसको, रह्यो बहुत भटकात।।
तात अब हमको लेहु उबार, नहीं तो जीवन है बेकार।।2।।

अगम अगोचरअलख अनादी, पारब्रह्म जगदीश।
कैसे तुमको पावें प्रभुजी, भोले त्रिभुवन ईश।।
शरण में लेकर दो भव पार, नहीं तो जीवन है बेकार।।3।।

'दास' अनाथ पुकारत तुमको, सुन लीजे इस बार।
भक्ति विमल श्री पदकमलों की, दीजे शंभु उदार।।
राम का दरस मिले मदनार, नहीं तो जीवन है बेकार।।4।।

10. दरसन आ के दो

कैलास के निवासी शंकर दरसन आ के दो।
कामना ये पूर्ण भोलेनाथ कर दो।।
प्रेम में मतवाले भोले शिवजी प्यारे।
नैया खैवनहार तुम्हीं नाथ हो हमारे।।
नाथ पड़े तेरे चरणन में अब तो सहारा दो।
कामना.....।।1।।

भोलेशंकर प्यारे, कैलास के निवासी।
दरस दिखा दो हमें, शिव अविनाशी।।
नाथ बचाया जैसे अब तक, आगे बचा लो।
कामना.....।।2।।

गले भुजंगा माथे चंदा, सिर पै गंगा धारे।
डम-डम डमरू हाथ में सोहे, भोलेनाथ हमारे।।
प्यारे बिगड़ी सब भक्तन की आ के बना दो।
कामना.....।।3।।

आस लगी निशिवासर हमको, अब तो दया कीजे।
चरण कमल की भक्ती स्वामी, हम सब ही को दीजे।।
'दास' शुगल कर जोरे बैठा, झाँकी दिखा दो।
कामना.....।।4।।

11. दास की आस

हे राम दयामय दीनन को, दे चरण कमल रज सुखी करो।
सब विकल पड़े तुअ माया से, कर कृपा दृष्टि सब शोक हरो।।
हे राम.....।।1।।

जिन चरनन की रज को पाकर, तरी अहल्या नारी है।
पापी अधमी सब तरे, बचे हम, आज हमारी बारी है।।
हे नाथ कृपा कर आजु हमें, अविरल भक्ति दे सुखी करो।
हे राम.....।।2।।

करुणासागर करुणा करके, ये सुनिये नाथ विनय मेरी।।
नित नेह रहे पद कमलों में, प्रभु संगति हो सज्जन केरी।
हे प्रभो! 'दास' को आस लगी, अब भक्त बनाकर सुखी करो।।
हे राम.....।।3।।

12. दास की पुकार

सुनो भोलेनाथ जी, ये दास की पुकार है।
दीनानाथ जानके ही, दीन खड़ा द्वार है।।
हारा यतन कर, औ खोजा जग सारा।
देखा हितू न कोई, तुम बिनु हमारा।।
छोड़ा जग का आसरा, ये जान निस्सार है। दीनानाथ.....।।1।।

पापी मन मेरा ये कहना न माने।
विषयन में रत नित परमारथ न जाने।।
शरणा गही तेरी, तू ही दानी सरकार है। दीनानाथ.....।।2।।

13. दीन की पुकार

हे मातु भवानी शैल–सुता, हम दीनन पै माँ दया कीजे।
अपने कर–कमलों उठा मातु, शिवपद कमलों में रख दीजे।।
हम अतिशय दीन बुखारी हैं।
माँ आये शरण तिहारी हैं।।
दो शरण मातु अब दीनन को, निज गोदी हमें उठा लीजे।
हे मातु.....।।1।।
क्रंदन कर माँ को पुकार रहे।
आरत बचनों को उचार रहे।।
हे मातु दास पर कृपा करो, शिवजी से हमें मिला दीजे।
हे मातु.....।।2।।

14. दे चरण शरण

हे दया धाम शिव शंकर जी, विश्वास निभाना त्रिपुरारी।
चरणों की भक्ती देकर के, निज दास बना लो मदनारी।।
औघड़दानी भोले प्यारे, डमरूधर शंकर अविनासी।
तुम्हें पुकारें क्षण–क्षण भोले, नीलकंठ काशीवासी।।
पार लगाओ नैया प्रभुजी, दूर करो दुख दुखहारी।
चरणों.....।।1।।
दे सुबुद्धि भवपाश काटि, अपना लो शंकर कैलासी।
शरणा आया संकटहारी, भोले शंकर प्रभु सुखरासी।।
दे चरण शरण अन्तर्यामी, कर सुखी दास को सुखकारी।
चरणों.....।।2।।

15. नैया नाथ बचा लीजे

ये नैया डगमग भोलेश्वर, आकर के नाथ बचा लीजे।
कर दया शम्भु औघड़दानी, बिगडी अब सभी बना दीजे।।
तेरे बिनु को सुने और प्रभु, गौरी शंकर अविनासी।
दुख दारिद अब दूर करो शिव, प्राणप्यारे कैलासी।।
गंगाधर भोले नीलकंठ, ममता मद मोह हटा दीजे।
कर दया.....।।1।।

मंगलमय आशुतोष शिजी, दरसन दो प्यारे मदनारी।
प्रबल झरोकों में डगमग, आ तुम्हीं सम्हालो त्रिपुरारी।।
दे चरण कमल रज आज हमें, प्रभु अपना दास बना लीजे।
कर दया.....।12।।

16. प्रभु जी इतना ना तरसाओ

प्रभु जी इतना ना तरसाओ।
कलियुग के हम पापी अधमी, आकर राह लखाओ।
प्रभुजी.....।।1।।

और सहारा नाथ न हमको, नैया पार लगाओ।
फँसे मोह-ममता में निशिदिन, गीता पाठ सिखाओ।।
प्रभुजी.....।।2।।

कब से आस लगाए बैठे, डमरू आन बजाओ।
नैना तरसत हैं दरसन को, औघड़दानी आओ।।
प्रभुजी.....।।3।।

निज मुख छटा भक्तन को, अब तो आन दिखाओ।
दीन 'दास' की विनय यही है, अपनी शरण लगाओ।।
प्रभुजी.....।।4।।

17. प्रेम के भूखे हैं भगवान

प्रेम के भूखे है भगवान।
दीन दयाल दया करते हैं, दीन दुखी जन जान।।1।।

आरत विनय सदा सुनते हैं, मेटत कष्ट महान।
दुख दारिद सब दूर करत हैं, दुखिया जन पहचान।।
प्रेम के.....।।2।।

दुर्योधन के मेवा त्यागे, देख अधिक अभिमान।
शाक विदुर घर प्रेम से खाया, दिया प्रेम सम्मान।।
प्रेम के.....।।3।।

जूठे बेर खाये शबरी के, तनिक न मन में म्लान।
'दास' पड़ा चरणों में प्रभु जी, करत नाम गुणगान।।
प्रेम के.....।।4।।

18. फिकर क्यों करें

फिकर क्यों करें हम, सुनों मेरे भाई।
फिकर करने वाला दूसरा है कोई।।1।।

जिसने है सारे ही जग को बनाया।
करके ये रचना जो जीवन चलाया।।

हमको तो भजना उसी को ही प्यारे।
करना उन्हीं को जो करना सो होई।। फिकर....।।2।।

चिन्ता क्यों करते औ तन को सुखाते।
होके मगन क्यों न हरी गुण गाते।।

भज के प्रभु नाम क्यों न करते सफल तन।
पार करने वाला ईश्वर है सोई।। फिकर....।।3।।

19. व्यर्थ मत जीवन खो

भजो नर तन पा रघुराई, व्यर्थ मत जीवन खो भाई।

लख चौरासी भोग भोग के, थकित हुआ मन तेरा।
रसना राम नाम अब भज ले, ये दिन चार बसेरा।
अन्त यू पंछी उड़ जाई। व्यर्थ मत जीनन खो भाई।।1।।

जग के नाते तृणवत जानों, ईश्वर एक सहारा।
तन तन ध्रम धाम सब वोही, माता पिता हमारा।।
राम की शरण लो जाई। व्यर्थ मत जीवन खो भाई।।2।।

कठपुतली सम सबहिं नचावत, माया भगवन की।
आस छोड़ जग की सब मनुआ, शरणा चरणन की।।
गहो मन में अति हरषाई। व्यर्थ मत जीवन खो भाई।।3।।

'दास' कहत आनन्दकंद भज, रघुवर प्यारे राम।
जगत प्रकाशक पारब्रह्म प्रभु, माया पति सुखधाम।।
मान मद तज हरि भज भाई, व्यर्थ मत जीवन खो भाई।।4।।

20. बहुतक नचाया राम

बहुतक नचाया राम, अब ना नचाना।
मझधार फँसी नैया, अब देर न लगाना।।

अग जग में फैली है, माया ये तेरी।
देखि देखि भ्रमित बुद्धि होती है मेरी।।
माया-मोह जाल के अब फन्द न फँसाना। मझधार.....।।1।।

ऐसी दया कीजे, मनवांछित वर पाऊँ।
शिवजी की भक्ती से तुमको पा जाऊँ।।
बालक मैं तेरा अब नाथ ना भुलाना। मझधार.....।।2।।

दिया दुःख दारिद, सो जानी ये दुनियाँ।
अब तो राम दरसन दो, शीतल कर अँखियाँ।।
दास पड़ा चरणों में, निजकर उठाना। मझधार.....।।3।।

21. भक्ति अंकुर

दो शक्ति हमें हो निर्मल मन, कर बरसा प्रेम सुधा की अब।
भक्ती का अंकुर उगा हृदय, कर सफल जन्म हे प्यारे शिव।।1।।

हे नाथ मोह ममता मद भी, इस अंकुर को न उखाड़ सके।
माया रूपिन डाकिन भी, इसका न कुछ भी बिगाड़ सके।।2।।

हरि नाम का रक्षक प्रहरी दो, जिससे ये तरुवर बन जाये।
पा बाढ़ नित्य सतसंग की ये, परिपक्व अवस्था पा जाये।।3।।

इस भक्ति रूप बट छाया में, हम सभी सुखी हो जावेंगे।
विश्वास यही है दृढ़ मेरे, प्रभु का दरसन पा जाऐंगे।।4।।

22. भजन धनुधारी का

भजन करो श्रीरामचन्द्र, धनुधारी का।
सीतापति भगवान भक्त भयहारी का।।1।।

ये नर तन प्रभु ने दीन्हा। है परम अनुग्रह कीन्हा।
दीन रखवारी का, सीतापति.....।।2।।

माया में फिरत भुलाना। फिर अन्त पड़े पछताना।।
राम असुरारी का, सीतापति.....।।3।।

लख चौरासी भरमाया। तब नर देही ये पाया।
कृपालु खरारी का, सीतापति.....।।4।।

ये कहता दास पुकारी। है नाम सकल दुखहारी।।
दीन दुखहारी का, सीतापति.....।।5।।

23. भारत की रक्षा करना है

हे भोले दो सद्बुद्धि हमें, सच्चे पथ पर प्रभु चलना है।
भयभीत न हों बाधाओं से, जननी की सेवा करना है।।1।।

सिखलाया हमको गुरुओं ने, सच्चे पथ पर अब डट जाना।
श्रम बिन्दु बहाना अवनी पर, लालच न कदाचित मन लाना।।
वीरों से भारत माता को, हरदम ही भरते रहना है।
भयभीत....।।2।।

ये भारत प्यारे वही जहाँ, धनुधारी रघुवर जन्म लिया।
सनमार्ग बताया दुनिया को, औ दुष्टन का संहार किया।।
तन-मन-धन से अब हमको, पावनतम मार्ग विचरना है।
भयभीत.....।।3।।

कर दया शम्भु दो वर ऐसा, सच्चे पथ पर ना झुकें कभी।
जिस क्षेत्र में जाकर कार्य करें, विघ्नों से विचलित हों न कभी।।
औघड़दानी दो शक्ति हमें, भारत की रक्षा करना है।
भयभीत.....।।4।।

24. भरोसा तेरे चरणों का

भरोसा तेरे चरणों का, है भारी प्यारे धनुधारी।
सरोवर प्रेम का तेरा, बनें मन मीन मनहारी।।1।।

दिया नर-तन अजुर देही, सफल कीजे इसे स्वामी।
पिलाकर भक्ति रस प्याला, उबारो हे अन्तर्यामी।।
सुनो इस दीन की विनती, हरो भव रोग दुखहारी। भरोसा.....।।2।।

ये जीवन हाथ तेरे है, लगा दो पार रघुराई।
डुबा दो प्रेम भक्ती के सरोवर में हमें आई।।
बना लो 'दास' अब स्वामी, दयामय राम सुखकारी। भरोसा.....।।3।।

25. भक्ती दे झोली भरो

श्रीराम सुनो ये पुकार प्रभो, हम आये शरण तिहारी है।
भक्ती दे झोली भरो नाथ, हम दुखिया दीन भिखारी हैं।।
माया यों जकड़े बन्धन में।
जैसे सुगन्ध है चन्दन में।।
अब दया करो, भव फन्द खोल, कर मुखी ये विनय हमारी है।
भक्ती.....।।1।।

करुणाकर हे रघुनाथ प्रभो।
शरणागत वत्सल नाथ विभो।।
भव शोक हरन, संताप शमन, त्रिभुवन रक्षक धनुधारी हैं।
भक्ती.....।।2।।

आशा देके न निराश करो।
प्रभु जन के हृदय में वास करो।।
जय कृपा सिन्धु सुखधाम प्रभो, प्रभु भक्तन के हितकारी हैं।
भक्ती.....।।3।।

दुख दारिद नाथ कृपालु हरो।
दे भक्ति 'दास' को सुखी करो।।
शरणागत वत्सल रघुवर प्रभु, भक्तन के सदा अभारी हैं।
भक्ती.....।।4।।

26. भोलेनाथ कहाँ हो

प्राणों के आधार भोलेनाथ कहाँ हो।
नैना बरसैं नीर, प्यारे दरस दिखा दो।।
और नहीं कुछ चाह मेरी, केवल ये ही माँगना।
जनम-जनम तक पद कमलों में नेहा रहे सुहावना।।
गणपति भैया गोद में बैठे, हमको बिठा लो।। नैना बरसैं.....।।1।।

हरदम है संतोष हमको, भोले तेरे विधान में।
पाते हैं आनन्द अनुपम, हम तेरे गुणगान में।।
भक्ति की है चाह, इसे पूर्ण बना दो। नैना बरसै.....।।2।।

27. भज ले शिव भगवान

सोच-समझ ले अब मन मूरख, ना करना अभिमान रे।
चार दिना की तेरी जिन्दगी, भज ले शिव भगवान रे।।
लख चौरासी भोग भोग के, पाया मानुष चोला।
ममता मोह हटा के मन से, भज ले शंकर भोला।।
मैं कर्ता ये व्यर्थ कल्पना, करना नहीं गुमान रे।
चार दिना.....।।1।।

अन्त समय सिर धुन पछतैहो, तब कछु काम न होवे।
अभी चेत ले समय न मिलहै, जीवन व्यर्थ ने खो दे।।
'दास' कहत ये जग सब झूठा अपना प्रभु पहचान रे।
चार दिना.....।।2।।

28. भजु हरि पावन नाम

भजु हरि पावन नाम सयाने।
पारब्रह्म जगदीश सनातन, घट-घट की सब जाने।
गर्व करो न सुन्दर काया, माटी में मिले जाने।।
भजु हरि.....।।1।।

धन दौलत कछु साथ न जैहै यहीं पड़ी रह जाने।
यह कलियुग है पाप समुंदर, बचते पुरुष विराने।।
भजु हरि.....।।2।।

मोह जाल अति दुस्तर मनुआ, रह्यो न अति लिपटाने।
'दास' कहत प्रभु चरण कमल बिनु, काम कछू न आने।।
भजु हरि.....।।3।।

29. भक्त-भगवान सवांद

भक्त : टूटे सभी सहारे आया शरणा तेरी।
बैल वाले गौरी प्यारे करो न देरी।।1।।

भगवान : डूडा बैल सवारी मेरी कैसे जल्दी आऊँ।
प्यारे भक्तो, धीरज धरना पुनि-पुनि ये समझाऊँ।।2।।

भक्त : नहीं बताओ हमें बहाना, कण-कण में तुम ब्यापे।
अज अविनासी घट-घट वासी वेद पुराणन भाषे।।3।।

भगवान : जहाँ पुकारो जैसा चाहो वहाँ चला मैं आता।
मन वांछित वर प्रिय भक्तों को देकर गले लगाता।।4।।

भक्त : बात कही ये प्रिय भक्तों की, मैं हूँ अधमी पापी।
माया फंदे फँसा दिवस निशि, भक्ति न हृदय समाती।।5।।

भगवान : भक्ति भावना यही है केवल, छोड़ें सभी सहारे।
तन-मन-धन से मेरे होवें वही प्राण से प्यारे।।6।।

भक्त : इतना बल है कहाँ प्रभू जी, माया से जै पावें।
अपने मन पाप वासना, कैसे कहो हटावें।।7।।

भगवान : चिन्तन मेरे नाम का करना, ये ही सहज सहारा।
सब कुछ तुम पाओगे प्यारे, मानो वचन हमारा।।8।।

भक्त : यही करूँगा भोले प्यारे, मुझको ना बिसराना।
नंदी बैल सवारी गोरी-प्यारे दरस दिखाना।।9।।

30. माया में ना फँसाना

कर जोर विनती स्वामी, माया में ना फँसाना।
अवलोक नैया डूबी, आकर के झट बचाना।।

हर क्षण सहारा तेरा, रघुनाथ राम प्यारे।
कर दूर दुःख मेरा, हम दीन तुअ सहारे।।
देकर के भक्ति विमला, उर ज्ञान बल बढ़ाना।
अवलोक नैया.....।।1।।

भव सिन्धु भरा भारी, नैया मेरी पुरानी।
गोता लगाती जाती, दुःख पूर्ण ये कहानी।।
हुई देर राम भारी, आ पार अब लगाना।
अवलोक नैया.....।।2।।

31. माया अजब तिहार

भगवन, माया अजब तिहार।
बाल केलि सम रचत भुवन सब, क्षण में करत संहार।
त्रिजग देव ऋषि मुनि यति योगी, पाते कभी न पार।।
भगवन.....।।1।।

कोउ दुख शोक रोग बस व्याकुल, करता आर्त पुकार।
सुख सागर महँ मीन मच्छ बन, कोउ नित करत बिहार।।
भगवन.....।।2।।

सुख-दुःख तो निशिदिन सम आवत, करते प्रबल प्रहार।
सुदृढ़ धीर हम बने सहैं सब, भजै तुम्हें मदनार।।
भगवन.....।।3।।

शिवशंकर हर साम्ब सदाशिव,
शम्भु महेश्वर त्रिपुरारी।
महादेव गायत्रीबल्लभ,
नीलकंठ भव मदनारी।।

32. राम सुनते है सबकी

दया करने वाले राम सुनते है सबकी।
धीरज धरो औ' करो आस उनकी।।
धीरज सदा जो तुम मन में धरोगे।
होके अटल अपने कारज करोगे।।
इक दिन मिलै फल, भक्ती चरण की। धीरज धरो.....।।1।।

रटते रहो प्रभु का नाम निशिदिन।
भजते रहो उनको होके मगन मन।।
इक दिन मिलें, राम, रखे रुचि मन की। धीरज धरो....।।2।।

33. विश्वास टूट नहीं सकता

विश्वास हुआ मन में, वो टूट नहीं सकता।
प्रेम भरा दिल में, अब छूट नहीं सकता।।
अगर स्वयं आओ राम, कर दो इनकार जो।
तो भी मानूँ चाहे, कर दो तिरस्कार जो।।
'राम' नाम प्रहरी, कोई लूट नहीं सकता।। प्रेम भरा.....।।1।।

माया नचाया नाच, कब तक नचायेगी।
'राम' नाम महिमा से, हार मान जायेगी।।
देरी हो सकती, पर चूक नहीं सकता। प्रेम भरा.....।।2।।

जीवन ये अपना निछावर है कीन्हा।
प्राण प्यारे राम तुमको, अब तो है चीन्हा।।
नाम का भरोसा मैं भूल नहीं सकता। प्रेम भरा.....।।3।।

धीरज सदा उर में, अब हम धरेंगे।
दयानाथ हम पैं, वे इक दिन करेंगे।।
अनुराग 'दास' का ये कभी छूट नहीं सकता।
प्रेम भरा....।।4।।

34. शम्भो, सुनि लो विनय हमारी

शम्भो, सुनि लो विनय हमारी। भोले गौरापति मदनारी।।
अज अविनाशी पारब्रह्म प्रभु जगत प्रकाशक नाथ।
चरण शरण दो दीन 'दास' को, सेवक बने सनाथ।।
नाथ तुअ महिमा अति भारी। शम्भो.....।।1।।

ब्रह्मा विष्णु तुम्हीं शिव शंकर, तुम्ही हो रघुवर राम।
नाम रूप अति अगणित तेरे, तुम्हीं एक सुखधाम।।
मातु-पितु तुम्हीं हो नाथ पुरारी। शम्भो.....।।2।।

इंद्रिय मन अरु बुद्धि, सभी ये माया से संभूत।
अज अविनाशी अमर आत्मा, वही है भगवत् रूप।।
पारवति पति शंकर त्रिपुरारी। शम्भो.....।।3।।

ऋषि मुनि सिद्ध यती योगी जन, पाते कभी न पार।
मैं कलियुग का पापी प्राणी, ग्रसित मोह मद मार।।
राम प्रिय डमरूधर दुखहारी। शम्भो.....।।4।।

नाथ उपाय एक नहि सूझत, केवल शरण तुम्हार।
पार लगा दो चाहे डुबा दो, उमानाथ सरकार।।
दास की अरज यही जारी। शम्भो.....।।5।।

35. शिव शिव भज

शिव शिव भज मन, जो जीवन का सार है।
शिव के भजन बिनु, जीवन ही बेकार है।।
माया भ्रम जाल में, फँसा क्यों है वन्दे।
मुश्किल नहीं, काटना भव के फन्दे।।
झूठे जग की झूठी माया, केवल भ्रमजाल है।
शिव के भजन बिनु, जीवन ही बेकार है।।1।।

अब तो भजन बिनु, इक क्षण न बिताना।
मानव की सेवा में, तन–मन लगाना।।
कर लो परहित भज लो प्रभु को, हो जाय नैया पार है।
शिव के भजन बिनु, जीवन ही बेकार है।।2।।

36. सदा सहारा तेरा

हे राम तुम्हारे चरणों में, ये दीन दास है बलिहारी।
माया से हमें बचा लो अब, कर दया दयामय सुखकारी।।1।।

अपने दुख–सुख किसे सुनावें, आप सिवा को हितकारी।
हे नाथ पड़े तव चरणों में, करु कृपा दीन जन दुखहारी।।2।।

विश्वास हुआ दृढ़ अब मन में, लाज रखेंगे त्रिशिरारी।
अब न किसी से कहें सुनेंगे, अपने दुःख हम असुरारी।।3।।

सदा सहारा नाम का भगवन, सहज सुलभ मंगलकारी।
पद पंकज की विमल भक्ति दे, सुखी करो अब धनुधारी।।4।।

37. हे भोले त्रिपुरारी

हे भोले त्रिपुरारी। हे भोले त्रिपुरारी।।
किस विधि विनती करें तुम्हारी, ओछी बुद्धि हमारी।
हे भोले....।।1।।

अनुचित बहुत किया है हमने, क्षमा करो मदनारी।
हे भोले.....।।2।।

हार थके हम जग से प्रभु जी, आए शरण तुम्हारी।
हे भोले.....।।3।।

जीवन नैया हाथ तिहारे, पार लगा दुखहारी।
हे भोले....।।4।।

दरस दिखा दो भोले प्यारे, 'दास' चरण बलिहारी।

हे भोले .....।।5।।

38. हे राम धनुधारी

हे राम धनुधारी। हे राम धनुधारी।
बहुतक दिन बीते आशा में, लीजे खबर हमारी।

हे राम.....।।1।।

तुम अपने भक्तन को रखते, जिमि बालक महँतारी।

हे राम.....।।2।।

पड़े नाथ हम भवसागर में, अतिसय दीन दुखारी।

हे राम.....।।3।।

चरण शरण की भिक्षा दे दो, शरणागत भयहारी।

हे राम.....।।4।।

विनय करते ये 'दास' तिहारी, सुनि लो राम खरारी।

हे राम.....।।5।।

पार लगा दो चाहे डुबा दो, अब तो शरण तिहारी।

हे राम.....।।6।।

39. हे राम रघुराई

हे राम रघुराई। हे राम रघुराई।।
गुरुवर पद कमलों की दया से, शिव की भक्ती पाई।

हे राम.....।।1।।

जब से शिव शंकर भोले ने, अपनी दया दिखाई।

हे राम.....।।2।।

तब से नित प्रति प्रभु चरणों में, अतिसय प्रीति समाई।

हे राम.....।।3।।

अगणित पाप किये हम भगवन, सबको दो बिसराई।

हे राम.....।।4।।

जैसी नाथ बनाई अब तक, आगे देहु बनाई।

हे राम.....।।5।।

हार थके कर यतन सभी हम, अब नहिं कछू बसाई।

हे राम.....।।6।।

नयना सफल करो दरसन दे, दीन 'दास' दर आई।

हे राम.....।।7।।

40. हे राम रघुराया

हे राम रघुराया। हे राम रघुराया।।
भूला भटका फिरा जगत में, अब तेरे दर आया।

हे राम.....।।1।।

फँसा रहा तेरी माया में, जीवन व्यर्थ गँवाया।

हे राम.....।।2।।

गुरुवर करी कृपा तब से ही, शिवजी का दर पाया।

हे राम.....।।3।।

इस जग की झूठी माया ने, अब तक है भरमाया।

हे राम.....।।4।।

अब तो हिये भरोसा भारी, करो 'दास' पर दाया।

हे राम.....।।5।।

41. हे राम सहारा तेरा

हे राम सहारा तेरा।
भूला भूला फिरा जगत में, कोई दिखा न मेरा।।

हे राम.....।।1।।

इस जग के सब झूठे नाते, चिड़िया रैन बसेरा।

हे राम.....।।2।।

क्षमा करो अब रघुवर प्यारे, जो अपराध धनेरा।।3।।

हे राम.....।।3।।

अपना लो प्रभु आज 'दास' को, बना लो अपना चेरा।

हे राम.....।।4।।

चरण कमल की भक्ती दे दो, मिटै ये मोह घनेरा।

हे राम.....।।5।।

हे राम सहारा तेरा। हे राम सहारा तेरा।।6।।

भाग 3 कीर्तन

पुस्तक के इस भाग में जो कीर्तन लिखीं हैं, उन सबमें स्वतंत्र भाव हैं और उनका गायन एक-एक करके पुनरावृत्ति करते हुए किया जाता है जैसा कि प्रथम कीर्तन में दर्शाया गया है।

इसी प्रकार जब तक मन लगा रहे एक ही कीर्तन को गाते रहें। शिव भक्त ऐसी कीर्तन करते-करते नृत्य करने लगते हैं और परमानंद प्राप्त करते हैं। उस सुख को वही जान सकता है जिसे वह प्राप्त होता है।

1. आर्त्त पुकार

दु:खों ने हमें घेरा भोले आके बचा। बैल की सवारी वाले देर न लगा।।1।।
आके बचा भोले आ के बचा। आके बचा भोले आ के बचा।।
बैल की सवारी वाले देर न लगा। बैल की सवारी वाले देर न लगा।।
देर न लगा प्यारे देर न लगा। देर न लगा प्यारे देर न लगा।।
बैल की सवारी वाले देर न लगा। बैल की सवारी वाले देर न लगा।।
दु:खों ने हमें घेरा भोले आके बचा। बैल की सवारी वाले देर न लगा।।
दु:खों ने अब तो है घेरा हमको। बचाओ भोले जी पुकारें तुमको।।2।।

जीवन के क्षण–क्षण में देत सहारा।
कर में लिये डमरू वो नाथ हमारा।।3।।

तुम सब कुछ नाथ हमारे।
तन मन धन से भी प्यारे।।4।।

दीनों के सहाय फरियाद सुन लो।
दुखिया पुकारे गौरीनाथ तुमको।।5।।

शरण महादेव की ये दास गहेगा।
भोले बिना आज मेरी कौन सुनेगा।।6।।

क्षण–क्षण आवत याद भोले प्यारे कहाँ हो।
निशिदिन तरसैं अँखियाँ नैन सितारे कहाँ हो।।7।।

कहाँ जाऊँ भोले तुम्हारे बिना।
तरसेंगी अँखियाँ निहारे बिना।।8।।

बिगड़ी बना दो आके गौरा के पिया।
दुखिया हूँ तेरा सहारा लिया।।9।।

भोला जी के दरसन को जिया तड़पे।
अँखियन से निशिदिन नीर टपके।।10।।

प्राणों के आधार भोले दरस दिखा।
नैना बरसैं नीर प्यारे देर ना लगा।।11।।

दूर करो कष्ट सारे मेरे पिता शिवजी।
छोड़ के तुम्हारा दर शरण गहूँ किसकी।।12।।

दुखिया दिल को सान्त्वना दो दरस दिखा के।
भोले तेरे दर आया आस लगा के।।13।।

प्राणप्यारे भोले शिव भूलो न हमें।
दुखिया हम पीर भरे टेरते तुम्हें।।14।।

और ना सहारा कोई मुझको प्रभो!
दीन हूँ पुकारूँ सदा नाथ तुमको।।15।।

भोले सरकार सुन लीजे ये पुकार।
दुखिया को भव से उतार दीजे पार।।16।।

कण-कण में है वास भोलेनाथ तुम्हारा।
औघड़दानी नाथ दीजे आज सहारा।।17।।

दरसन को है प्यासी अँखियाँ तुमको नाथ बुलाती हैं।
कहना भी ना मानें मेरा, निशिदिन नीर बहाती हैं।।18।।

भोले मेरे दुखों का अन्त कर दो।
मुरझाए हुए दिल में बसंत कर दो।।19।।

चाँद वाले मुखड़े का दरस दिखा।
कैलास वाले शंकर मत तड़ापा।।20।।

तेरे दरसन का मैं प्यासा।
पड़ा हुआ हूँ नाथ उदासा।।21।।

डमरूधारी शिव सरकार।
सुनिए जन की करुण पुकार।।22।।

टूटे सभी सहारे आया शरण तेरी।
बैल वाले गौरी प्यारे करो न देरी।।23।।

टूटे सभी आसरे और मेरे।
लाज मेरी कृपासिंधु हाथ तेरे।।24।।

भोले प्यारे दरस दिखा।
तरसैं अँखियाँ आके बुझा।।25।।

भोले जैसा नाथ मुझे कहाँ मिलेगा।
दुखियों की टेर और कौन सुनेगा।।26।।

मुझे ना बिसारो नाथ मुझे तेरा आसरा।
तेरे बिना दुनियाँ में मेरा कोई नाथ ना।।27।।

तेरे बिना ना जानू किसी को भोले शंकर प्यारे।
बीच धार में फँसी ये नैया कर दो नाथ किनारे।।28।।

आशुतोष भोले शिव गौरी प्यारे।
तेरे बिना मेरे दुख कौन टारे।।29।।

दास हूँ तिहारा भोले तेरे सहारे।
तेरे सिवा मेरा कष्ट कौन निवारे।।30।।

आसरा तिहारा भोलेनाथ मुझको।
तेरे सिवा बोलो पुकारूँ किसको।।31।।

लाज मेरी गौरीनाथ तेरे हवाले।
विपदा में आन फँसा नाथ बचा ले।।32।।

दुनिया भुला दे भुला दे मगर।
तुम ना भुलाना मुझे शिवशंकर।।33।।

2. नाम गुणगान

भज गोविन्दं भज गोपाला।
कृष्ण कन्हैया मुरलीवाला।।1।।

जै जै भोलेनाथ की।
गिरिजा गौरी मात की।।2।।

गिरिजा दुलारे गणपति जय-जय।
सदाशिव हमारे पारवती जय-जय।।3।।

हाथ लिए मक्खन औ जसुदा के लाल।
कब से पुकारूँ तुम्हें आओ नंदलाल।4।।

जय बोलो कृष्ण कन्हैया की।
जय बलदाऊ के भैया की।।
जय नन्द यशोदा मैया की।
जय मुरली मधुर बजैया।।5।।

गणेश जै जै महेश जै जै।
गौरीशंकर उमेश जै जै।।6।।

जै भोले औघड़ दानी।
जै गिरिजा मातु भवानी।।7।।

हे दीनानाथ पुरारे।
तन मन धन नाथ हमारे।।8।।

जय रघुवर जय जय त्रिशिरारी।
शरणा तेरी जन दु:खहारी।।9।।

गणपति गिरिजा के प्यारे।
प्रभु भोलेनाथ हमारे।।10।।

प्रेम के प्यासे भोलेनाथ हमारे।
दुखियों के काज सदा नाथ सुधारे।।11।।

जय सिया राम, जय जय हनुमान।
संकट मोचन कृपा निधान।।12।।

यशुदा के लाल भजो यशुदा के लाल।
गिरिधर गोपाल भजो, गिरिधर गोपाल।।13।।

आदि शक्ति दुर्गे जग जननि भवानी।
भद्र काली भोले प्रिया शिवा नमामि।।14।।

जय रघुपति जन दुखहारी।
जय जय प्रभु अवधबिहारी।।15।।

3. प्रभु पर भरोसा

चिन्ता कभी न करते चाहे संकट हो भारी।
डरते नहीं किसी से हम तो शिव के दरबारी।।1।।

आसरे तिहारे प्यारे बैल वाले।
पाप ताप काटो शीश गंग धारे।।2।।

जीवन नौका सौंपी भोले तेरे हवाले।
सुधि लीजे मेरी आके बैल वाले।।3।।

जय गणपति, जय जय जग बंदन।
मूष की सवारी, गिरिजा के नंदन।।4।।

राधे राधे गोविन्द गोविन्द राधे।
गोविन्द राधे, गोपाल राधे। राधे....।।5।।

आनंद छवि घनश्यामा।
बोलो जय सियारामा।।6।।

आसरा करें क्यों और किसी का।
सदा जब सहारा भोले पार्वती का।।7।।

क्या करेगा काल अनिष्ट।
जिनके शंकर जी हैं इष्ट।।8।।

हमें भरोसा श्री शिव का।
दुनिया में फिर डर किसका।।9।।

चिन्ता नहीं नैया करेंगे किनारे।
पारवती पति भोलेनाथ हमारे।।10।।

4. प्रभु की झाँकी

बाजती कैलास पर प्यारी डमरू।
नाच रहे भोले शिव जगद्गुरु।।1।।

भीड़ लगी भक्तों की आज उनके शैल पर।
डमरू बजा रहे शिव चढ़े बैल पर।।2।।

झाँकी अनुपम मनहारी।
नित नयनन बसे हमारी।।3।।

डमरू बजाता देखो कौन आ रहा।
काशी का निवासी शिव संग में शिवा।।4।।

दिखा दो दिखा दो दिखा दो प्यारे।
झाँकी मनोहर कैलास वाले।।5।।

है लीला अजब तिहारी।
हे शंकर डमरूधारी।।6।।

बाएँ माँ गोद में गनेश बिठारे।
नाँदिया पै चढ़े आओ नाथ हमारे।।7।।

डमरू त्रिशूल गले नाग कारे।
शैल-सुता संग भोलेनाथ पधारे।।8।।

नाच रहे राधा संग कृष्ण कन्हैया।
माखनचोर मटकीफोर वंशी बजैया।।9।।

आसरा तुम्हारा ले पड़े वन में।
एक ही सहारा भोले तेरा मन में।।10।।

गले भुजंगा सिर पै गंगा कर में डमरू धारे।
गोद में गणपति बाँये गिरिजा भोलेनाथ पधारे।।11।।

5. प्रभु का सहारा

भजु राधेश्याम युगल चरणा।
तज आस त्रास, गहु प्रभु शरणा।।1।।

आसरे जो रहें गौरी शिव के सदा।
होवें पूर्ण काम पाएँ भक्ति सुखप्रदा।।2।।

तेरे न आयें तो जायें हम किधर।
बिगड़ी बनाने वाले भोलेशंकर।।3।।

प्राणों से प्यारा, भोलेनाथ हमारा।
दुनिया में एक यही मुझे सहारा।।4।।

तेरे सिवा ना जानूँ किसी को, भोलेशंकर प्यारे।
बीच धार में फँसी ये नैया, कर दो नाथ किनारे।।5।।

तेरे सिवा इस जग में प्रभुजी, मेरा न कोई और है।
तेरे दर को छोड़के भगवन, मुझे ने कोई ठौर है।।6।।

भोले शिव तू मेरा है।
मुझे सहारा तेरा है।।7।।

कौन विधि तुमको रिझाऊँ भगवान।
एक ही सहारा गाऊँ 'नाम' गुणगान।।8।।

दुखी होके जब मैंने शिव को पुकारा।
आशुतोष भोले तुरत दीन्ह सहारा।।9।।

भोले बाबा देना सहारा।
तेरे बिना है कौन हमारा।।10।।

आसरा करें क्यों और किसी का।
सदा जब सहारा भोले-पार्वती का।।11।।

जिसे सहारा शिव शंकर का उसे कहो डर किसका।
दुनियाँ रूठे फिर भी बाल न बांका होवे उसका।।12।।

हम गौरी मैया के लाल।
फिरते सदा मस्त खुशहाल।।13।।

6. प्रभु से प्रश्न

छोड़ के तुम्हारा दर जाऊँ मैं कहाँ।
बोलो तो पिता शिव माता गौरजा।।1।।

आये जो भी माँगने तुम्हारे दर पर।
खाली नहीं जाये कभी भोले गौरीवर।।2।।

भोले प्यारे आस तिहारी, छोड़ो न हमें।
तेरे सिवा औघड़दानी टेरें हम किन्हें।।3।।

नेहा तो लगाया भोलेनाथ तुमसे।
तेरे सिवा पीर मन की कहें किससे।।4।।

कहाँ जाऊँ कौन मेरा तुम्हीं बताओ।
औघड़दानी भोले प्यारे लाज बचाओ।।5।।

मेरे मनहारी शिव कितना तरसाओगे।
प्यारे गौरीनाथ कब दरस दिखाओगे।।6।।

दुखी होके भाज मैंने शिव को बुलाया।
आय भोलेनाथ मेरा काम बनाया।।7।।

जब-जब पड़ी है भीर मैंने तुमको पुकारा।
आ-आ के नाथ तुम्हीं कष्ट निवारा।।8।।

कहाँ छिपे हो झलक दिखा के जानकी प्यारे।
चैन पड़े न तेरे बिना नयनों के तारे।।9।।

मन मन्दिर बसो हमारे।
गणपति गिरजा शिव प्यारे।।10।।

7. प्रभु से माँग

नीलकंठ दयामय श्री त्रिपुरारे।
पूरण सब काम करो शिव जी हमारे।।1।।

हे भोलेश्वर गिरिजा के प्यारे।
नैया तेरे हाथों कर दो किनारे।।2।।

कृष्ण मुरलिया प्यारे आके बजा।
सोते मोह निदिया में दीजै जगा।।3।।

शंकर जी के हम हैं शंकर जी हमारे।
दरस दिखा दो गिरिजा के प्यारे।।4।।

बैल की सवारी वाले दरस दिखा।
तरस रहीं अँखियाँ आके बुझा।।5।।

जै भोलेश्वर जै मदनारी।
पार लगाओ नैया हमारी।।6।।

गौरी गिरिजा शंभु महेश।
रक्षा करते रहे हमेश।।7।।

प्रभु गिनहु न दोष हमारे।
तेरी माया से हम हारे।।8।।

डमरू बजाने वाले दरस दिखा।
गौरजा के भोले प्यारे देर न लगा।।9।।

दया करो दीन पर आया हूँ तुम्हारे दर।
माता श्री गौरजा पिता भोलेशंकर।।10।।

प्रभु हम है दास तुम्हारे।
अपना लो भोले प्यारे।।11।।

छोटी–सी पुकार भोले मेरी सुन लो।
नैया मझदार इसे पार कर दो।।2।।

गौरी माँ मैं तेरा लाल।
मैया रखना मेरा ख्याल।।13।।

कलियुग का पापी हूँ गौरीनाथ उबारो।
बिगड़ी हुई भोलेनाथ सुधारो।।14।।

बालक हूँ तेरा अब दास बनाओ।
दारिद दुख दोष भोलेनाथ मिटाओ।।15।।

दूर करो पाप ताप भोला जी संसार के।
बैल की सवारी वाले हम तुम्हारे आसरे।।16।।

कहाँ छिपे बैठे गौरीनाथ बोलिये।
आया हूँ द्वारे मैं किवाड़ खोलिये।।17।।

हमको भी गादी में माँ बिठाना।
हम तुम्हारे बालक हैं माता उमा।।18।।

आसन गौरीनाथ प्रभू यहीं बिछा लो।
मेरा मन–मन्दिर कैलास बना लो।।19।।

है यही विनय त्रिपुरारी।
हम पायें शरण तुम्हारी।।20।।

गंगाधारी नाथ जरा दया करिये।
'दास' हूँ मैं तेरा मेरे पाप हरिये।।21।।

विनय यही भोले शिव पाँव पड़के।
चले जाओ मेरे प्रभु बैल चढ़के।।22।।

राह निहारूँ भोलेनाथ तेरी।
चले आओ प्रभो अब करो न देरी।।23।।

शिवजी के चरणों में रहे मेरा मन।
गाऊँ गुणगान सदा होके मगन।।24।।

छोटा-सा बाल आज भीख माँगता।
चरणों के पास रहे, यही चाहता।।25।।

सदा है सहारा तेरा पार लगाओ।
भूले अज्ञानी आ राह दिखाओ।।26।।

गौरजा के भोले प्यारे मेरे दर आ।
बैल की सवारी संग माता गौरजा।।27।।

दीनबंधु सुनि लो ये विनय हमारी।
क्षण क्षण हो याद हमें नाथ तुम्हारी।।28।।

चाह यही इक मेरी भगवन, और चाह मिट जावें।
केवल तेरी चाह रहे बस एक चाह रह जावे।।29।।

औघड़दानी मेरे तो तुम्हीं हो सभी।
दीजे वर नाथ साथ छूटे न कभी।।30।।

प्रेम का प्यासा तेरे दर आया।
अपना बना लो भोले करो दया।।31।।

बाल हूँ तिहारा कीजे क्षमा पुरारी।
रोष न करो ओछी बुद्धि हमारी।।32।।

नाव पतवार बिनु दूर है किनारा।
सिंह वाली माँ हमें दे दो सहारा।।33।।

हाथ में त्रिशूल लेके आओ शिवजी।
भक्तों की लाज तो बचाओ प्रभुजी।।34।।

गोद में गणेश लिये पारवती साथ।
मेरे हिये आन बसो प्रभु भोलेनाथ।।35।।

दीन–दुखहारी सुख सरिता बहाइये।
गौरजा गनेश संग दरस दिखाइये।।36।।

मेरे हिये भक्ती का दीप दो जला।
विनय यही बार–बार गौरी के पिया।।37।।

हे शंकर गंगाधारी।
प्रभु लेना खबर हमारी।।38।।

नाव मझधार करो नाथ किनारे।
दीनों के सहाय भोलेनाथ हमारे।।39।।

माँगता यही दीजे गिरिजारमन।
चरणों के पास रहे सदा मेरा मन।।40।।

विनती यही है उमा महेश।
करिये जन के दूर क्लेश।।41।।

दिखा दो, दिखा दो, दिखो दो कन्हैया।
रसभरी ये झाँकी बलदाऊ के भैया।।42।।

जैसी तेरी चाह भोले वही मंजूर।
चरणों से नाथ नहीं कीजे कभी दूर।।43।।

शंकर जी मैं तुम्हें पुकारूँ आओ गौरीनाथ।
कब से प्रभुजी राह निहारूँ भोले दीनानाथ।।44।।

तुम हो मेरे नाथ मैंने खबर बिसारी।
वर दीजे क्षण–क्षण हो याद तुम्हारी।।45।।

चाह नहीं सुख भोग की भगवन केवल भक्ती दे दीजे।
चरण कमल नित नेह रहे बस इतना प्रभु कर दीजे।।46।।

मुरली बजा दो राधा के पिया।
मैंने तो आसरा तेरा है लिया।।47।।

चले आओ गोपीनाथ कृष्ण मुरारी।
कब से तेरी मैंने है राह निहारी।।48।।

मुरली की धुन सुन नाचे जिया।
तरस रहे दरसन दो राधा पिया।।49।।

जै शिव जै शिव जै शिव शंकर।
दूर करो मेरे दुख प्रभु दुखहर।।50।।

दुखिया की पीर हरो कृष्ण कन्हैया।
पार करो भगवान मझधार में नैया।।51।।

दशरथनंदन श्री रघुराज।
रघुवर मेरे हृदय विराज।।52।।

मन–मंदिर बसो हमारे।
गणपति गिरजा शिव प्यारे।।53।।

बिगड़ी बनाने वाले बिगड़ी बना।
गौरजा के भोले प्यारे दरस दिखा।।54।।

काम क्रोध माया के फंदों ने मेरा मन घेरा।
मुझे बचाओ शंकर भोले मैं चरणों का चेरा।।55।।

विनय यही भोले शिव मेरी सुनना।
प्रभो अपने चरणों से दूर न करना।।56।।

नाव मझधार प्यारे पार लगाना।
दास हूँ तिहारा भोले भूल न जाना।।57।।

जीवन नैया तेरे हाथ।
पार लगाओ भोलेनाथ।।58।।

रूठना न कभी महादेव मुझसे।
विनय करे दास उमानाथ तुमसे।।59।।

मेरे मन बसियों सिया जी के प्यारे
जोग जप जानूँ नहीं नाम के सहारे।।60।।

8. प्रभु समर्पण

लगन चरणों में शिव के लगाये जायेंगे।
ऐसे दाता पै सरबस लुटाये जायेंगे।।1।।

हम तुम्हारे गौरीवर तुम हमारे हो।
हमें अब फिक्र क्या जब तुम सहारे हो।।2।।

भक्तों के काम शूलपाणि संभारे।
हमको क्या सोच वही नाथ हमारे।।3।।

जैसी तेरी चाह भोले वही मंजूर।
चरणों से नाथ नहीं कीजै कभी दूर।।4।।

चरणों में अरजी दी शंकर विभो।
जिसमें हो हित कीजे वैसा प्रभो।।5।।

हित-अनहित को हम क्या जानें बालक हैं नादान।
जैसा तुम ही अच्छा समझो कर दीजे भगवान।।6।।

नहीं किसी से कहना-सुनना तुम ही एक सहारे।
मेरे हित की करने वाले गौरी गनपति प्यारे।।7।।

मेरे तो सहाय सदा गौरी के पिया।
अब तो मैंने आसरा उन्हीं का लिया।।8।।

9. मन का प्रबोधन

चिन्ता न करियो विपदा जो घेरे।
शिव को पुकारना हे मन मेरे।।1।।

जीवन खोता क्यों अनमोल।
जय शिव जय शिव जय शिव बोल।।2।।

शिव भज ले शंकर भज ले।
छोड़ दे कपट मन शिव भज ले।।3।।

शिव शिव भज मन जो जीवन का सार है।
शिव के भजन बिनु जीना ही बेकार है।।4।।

विषयों को भोग भोग मन क्या किया।
हरि के भजन बिनु जिया क्या जिया।।5।।

स्वारथ की है दुनिया सारी प्रभु से सच्चा नाता।
उनके पद कमलों के आगे अब कुछ नहीं सुहाता।।6।।

क्षण–भंगुर जग के सुख छोड़ो प्रभु से नेह लगाओ।
माया–मोह हटाकर मन से भोले के गुण गाओ।।7।।

शिव शिव बोल मन हरी हरी बोल।
व्यर्थ में न खो दे श्वास बड़ी अनमोल।।8।।

आया है किस काम से विचार कर ले।
बिगड़ी हुई का सुधार कर ले।।9।।

खोजता है क्या शिव से प्यार कर ले।
नाता लगा के भव पार कर ले।।10।।

भोला भोला प्रेम से तू मन कह ले।
भोले गौरीनाथ से फल चार यह ले।।11।।

भीर पड़े शिव जी को पुकारिए।
सुख में भी कभी ना बिसारिए।।12।।

भज ले मन राम राम झूठा सब संसार है।
चार दिन का जीवन तेरा, क्यों करता तकरार है।।13।।

शिव का भजन जिन्ह प्रेम से किया।
दुनिया में जीना उन्हीं ने जिया।।14।।

पापी बढ़े दिनोंदिन सदा भय जिनका।
शिव के सहारे जो उन्हें नहीं चिन्ता।।15।।

मेरे मन विषयों से मुख मोड़ ले।
भला यही शिव जी से नाता जोड़ ले।।16।।

दुनिया में डर नहीं उन्हें किसी का।
जिन्हें है सहारा शिव पारवती का।।17।।

झूठा संसार प्रभु का नाम गा ले।
विषयन की सरिता से मन को हटा ले।।18।।

पारवती माँ का नाम जपिये।
दुख भगें दूर सदा सुखी रहिये।।19।।

पारवती माँ को पुकार लीजिये।
डूब रही नाव भव पार कीजिए।।20।।

तेरा नहीं कोई मना तुझे ये मलाल है।
सोच ना करो गौरीनाथ को खयाल है।।21।।

विषयन की सरिता में गोता न लगाइये।
होके मगन मन शिव शिव गाइये।।22।।

चंदा गंगाधारी भोलेनाथ हमारे।
दुख सभी दूर होवें नाम उचारे।।23।।

लख चौरासी भोग भोग के नर देही ये पाई।
शरणा भोले नाथ की गहो प्रेम से भाई।।24।।

मेरे मन रह शिव चरणों के पास।
कोई कर सके ना तुझको उदास।।25।।

राजा या हो रंक जावें एक दिन सभी।
सोच ये हरी का नाम भूलो ना कभी।।26।।

मानस देहा व्यर्थ न जाय।
भज लो शंकर मन चित लाय।।27।।

जग के नाते चार दिना के, प्रभु से सच्चा नाता।
धन्य वही है इस दुनिया में, रामनाम गुण गाता।28।।

कलियुग का जमाना है पाप खदान।
एक ही उपाय गाओ भोले गुणगान।।29।।

मत खो जीवन बहु अनमोल।
गोविन्द गोविन्द हरी हर बोल।।30।।

सार न संसार में भजो हरी नाम।
दौलत सब पड़ी रहै, यही आवे काम।।31।।

जीने की दुनिया में जीते सभी।
भजे शिव को जीना सफल है तभी।।32।।

पापी मन दुनिया में है क्या धरा।
भजो नित गणपति भोले शिवा।।33।।

भोग सभी जग के हैं तुच्छ निस्सार।
शिव के भजन में है आनंद अपार।।34।।

नित भोले के गुण गाओ।
अब जीवन सफल बनाओ।।35।।

विषयों की लपटों में अब न जलो।
शरणा में आ गौरी शिव को भजो।।36।।

स्वारथ की दुनिया तू चेत ले अभी।
मौका न ऐसा मिलेगा कभी।।37।।

नर देही मुश्किल से मिली भाई।
कर ले सफल शिव के गुण गाई।।38।।

नर देही पाने का फल है यही।
भजैं शिव को त्याग कामनाएँ सभी।।39।।

जीवन अनमोल व्यर्थ गँवा रहा तू।
विषयन में सुख शान्ति खोज रहा तू।।40।।

सच्चा सुख मिले ना हरि के बिना।
चेत अभी गँवा दीन्हें बहुते दिना।।41।।

भजो नित पशुपति भोले सुखधाम।
तेरे सब मनुआ पूरे होवें काम।।42।।

चार दिन का मेला है ये, झूठा सब संसार।
नाता जोड़ो शिवशंकर से होवे बेड़ा पार।।43।।

चार दिन का जीवन तेरा ना करना अभिमान।
भव सागर से पार जो जाना भज ले शिव भगवान।।44।।

तेरा क्या है मन ये विचार कर ले।
झूठी आस छोड़, शिव से प्यार कर ले।।45।।

यही बड़ा दुर्भाग्य जगत में, सुनि लो मेरे भाई।
हरी भजन बिनु मनुआ तूने, श्वासा व्यर्थ गवाँई।।46।।

जिसे सहारा शिव शंकर का, उसे कहो डर किसका।
दुनिया रूठे फिर भी बाल, न बाँका होवे उसका।।47।।

पापी मन क्यों फँसता जाता, दुनिया के जंजाल में।
भजन करो प्रभु का तन-मन से, खुश रहना हर हाल में।।48।।

जब जब आया संकट भारी मैंने तुम्हें बुलाया।
संकटहारी दूत भेजकर मुझको आन बचाया।।49।।

पापी मन क्यों फँसता जाता दुनियाँ के जंजाल में।
भजन करो प्रभु का तन मन से खुश रहना हर हाल में।।50।।

मेरे मनुआ शिवजी प्यार ले।
सागर अथाह सहजहिं पार कर ले।।51।।

भजन करो प्रेम से शंकर गौरीनाथ का।
जिनका रहे भीर में सदा तुम्हें आसरा।।52।।

जहाँ काम तहँ राम नहिं,
जहाँ राम नहिं काम।
अस बिचारि सुन सठ मना,
भजहु राम निष्काम।।53।।

दुनियाँ की धन दौलत भाई, यहीं पड़ी रह जानी है।
भजन करो निशिवासर प्रभु का, यही सीख मन लानी है।।54।।

रे मन मूरख क्यों उलझा है, दुनियाँ के जंजाल में।
काम न तेरे आहै कोई, अंत समय के हाल में।।55।।

अभी चेत ले क्या बिगड़ा है, समय है थोड़ा बाकी।
'राम' नाम की झड़ी लगा दे, क्यों भटके चौरासी।।56।।

दुनियाँ के सहारे छोड़, आओ शिव द्वार।
चिंता-फिकर न करना कोई, होवे बेड़ा पार।।57।।

दुनियाँ के सब झूठे नाते, रहना शंभु सहारे।
लहर-लहर लहराती नैया, करते वही किनारे।।58।।

जब भी दुनियाँ ठुकराती।
तब तब प्रभु की सुधि आती।।59।।

भूला भटका फिरा जगत में, मिला न कोई सहारा।
तेरे बिना हे भोलेशंकर कोई न हितू हमारा।।60।।

सुनि लो करुण पुकार

सुनो प्रभु मेरी करुण पुकार।

गज की टेर तुरत उठि धाए। चक्र छोड़कर प्राण बचाए।।
ग्राह को भी निज धाम पठाया। कृपा बिंदु उस पर बरसाया।।
मेरी बेर देर क्यों करते, सबके प्राणधार।
सुनो प्रभु.....।।1।।

द्रुपद सुता ने टेर लगाई। धाए नंगे पैर कन्हाई।।
रुकमणि पूँछा उन्हें बताया। तुरत सभा में चीर बढ़ाया।।
हारा दुष्ट खींचकर उसको, लागा करन चिकार।
सुनो प्रभु.....।।2।।

दुर्योधन ने पास बुलाया। बहुत प्रलोभन तुम्हें दिखाया।।
उसका भोजन रास न आया। साक बिदुर घर प्रेम से खाया।।
ऐसे प्रेम पुजारी प्रभु को, नमन है बारम्बार।
सुनो प्रभु.....।।3।।

परम प्रभु से प्रार्थना

हे परम प्रभु! आपकी घोषणा है कि 'निर्मल मन' वाले ही आपको पा सकते है, पर आप ही बताइए हम कलियुग के प्राणी निशिवासर पापपयोनिधि में डूबे रहते हैं, निर्मल मन कैसे बनें। यह कार्य तो आपको ही करना पड़ेगा। बस हम तो आपकी शरण आ गए। अब जो करना है आप ही करें। हाँ! आपकी एक और घोषणा है जो आपने अपने परम भक्त–सखा अर्जुन से की थी कि केवल तुम मेरी शरण में आ जाओ, तुम्हें पाप मुक्त कर दूँगा।

मेरा मन अभी भी दुनियाँ में फँसा हुआ है, तो क्या मैं आपकी शरण में नहीं आया। ऐसा लगता है कि मैंने शरण में आने का केवल अभिनय किया है, यदि आपकी शरण में आ गया होता तो फिर दुनियाँ के प्रपंच मेरे मन में क्यों बसते। अतः शरण में लाने का काम भी अब आपको ही करना होगा।

आपकी और एक बात याद आ रही है। आपके परम भक्त संत तुलसीदास जी ने लिखा है कि जब आपकी कृपा होती है तभी जीवन में कभी किसी विशुद्ध संत से मिलन होता है। कुछ ऐसी व्यवस्था आपको ही करनी होगी कि कोई विशुद्ध संत मिलें जो मुझे आपकी शरणागत करा दें।

आपके नाम 'राम' का महत्त्व मैंने कई शास्त्रों में पढ़ा, कई निबंधों में पढ़ा और सतत् 'राम–नाम जप' का प्रयास किया, किन्तु एक–दो मिनट बाद वह छूट जाता है और सांसारिक विचार मन को घेर लेते हैं।

मैंने अपनी यह दयनीय दशा आपके सम्मुख प्रस्तुत कर दी; अब चाहे डुबाओ चाहे उबारो! प्रभु सब आपके हाथ है।

भक्ति पुष्प

प्रथम संस्करण: हिन्दी अकादमी दिल्ली के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

द्वितीय संस्करण: 'श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति के सौजन्य से प्रकाशित

©**श्रीमती कुसुम पटैरया**

डी-11, सेक्टर-36

नोएडा-201303

प्रथम संस्करण: सन् 1991 में प्रकाशित

द्वितीय संस्करण: चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, संवत् 2075
18 मार्च सन् 2018 ई.

द्वितीय संस्करण मुद्रक

एक्सलप्रिंट, सी-36, फ्लैटेड फैक्ट्री कॉम्प्लेस

झण्डेवालान, नई दिल्ली-110055

Bhakti Pushpa (Collection of Prayes of God) : Rs............./-

लेखक परिचय

जन्म - ग्राम - बलचौर, जिला - महोबा (उत्तर प्रदेश), नवम्बर (1946)

शिक्षा - सिविल इंजीनियरी में स्नातक डिग्री (1971), अमेरिका के कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय से 'जल विज्ञान' में स्नातकोत्तर प्रमाणपत्र (1983) तथा गोरखपुर स्कूल ऑफ नेचुरल्न थेराप्यूटिक्स, आरोग्य मन्दिर, गोरखपुर से प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग में डिग्री (1995)।

अनुभव :

(क) **तकनीकी क्षेत्र :** सन् 1967 से 1974 तक मध्य प्रदेश विद्युत मंडल में ओवरसियर/सहायक इंजीनियर के पद पर कार्य किया। तत्पश्चात् जून 1974 में 'केन्द्रीय जल इंजीनियरी (ग्रुप ए) सेवा से केन्द्रीय जल आयोग में सेवा प्रारंभ की और नवंबर 2006 में मुख्य इंजीनियर के पद से सेवा निवृत्त।

(ख) **राजभाषा हिन्दी तथा अन्य क्षेत्र** (1) उपसचिव, भारत सरकार, राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय)के पद पर कार्य किया। (1989-93)

(2) केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद के महामंत्री एवं उपप्रधान के रूप में कार्य किए।

(3) भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य रहे/हैं।

(4) विभिन्न धार्मिक/सामाजिक संस्था की कार्यकारिणी के सदस्य रहे/हैं।

लेखन-संपादन कार्य :

भागीरथ, विज्ञान गंगा तथा अन्य पत्रिकाओं के संपादक रहे/हैं। समाचार पत्रों/पत्रिकाओं/राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में 52 लेख (34 हिन्दी तथा 18 अंग्रजी में) प्रकाशित स्वरचित कविताओं का संग्रह सप्त सुमन प्रकाशित (2010)।

सम्मान प्राप्ति :

केन्द्रीय जल आयोग के आगरा मंडल में वर्ष 1983-84 में सम्पूर्ण कार्य राजभाषा नीति के अनुसार शत-प्रतिशत हिन्दी में संपादित कराने के लिए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में सितंबर, 1985 में माननीय प्रधानमंत्री जी से **राजभाषा शील्ड तथा प्रशस्ति पत्र** प्राप्त किया। अन्य कई अवसरों पर भी राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु सम्मानित किया गया। सितम्बर, 2000 में इस हेतु **अन्तर्राष्ट्रीय संस्था द्वारा विश्व हिन्दी सम्मेलन में सम्मानित किया गया।**